facebook.com/thebharatshri
twitter.com/thebharatshri
website thebharatshri

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम

भारत श्री

राष्ट्रीय हिंदी साप्ताहिक

सोमवार, 16 फरवरी 2026 ● वर्ष 7 ● अंक 31 ● मूल्यः 5 रुपए

सद्गुरु कृपा से ही मिलता है ब्रह्मज्ञान

देवभूमि में नो एंट्री की दस्तक

आस्था, कानून और रोज़ी-रोटी के बीच खड़ा एक बड़ा सवाल

हर की पैड़ी से चारधाम तक गैर-हिंदुओं के प्रवेश पर बैन की मांग तेज, कानून, धर्म और सामाजिक संतुलन पर छिड़ी बड़ी बहस

@ भारतश्री ब्यूरो

हरिद्वार की पावन धरती पर, गंगा के तट पर बसे हर की पैड़ी में श्रद्धालुओं की भीड़ रोज की तरह उमड़ रही थी। घंटियों की आवाज, आरती की गूंज और "हर-हर गंगे" के जयकारों के बीच एक और चीज लोगों का ध्यान खींच रही थी,घाटों पर लगे नए बोर्ड।बोर्ड पर लिखा था कि हर की पैड़ी पर गैर हिंदुओं का प्रवेश वर्जित है।नीचे लिखा था कि आज्ञा से म्युनिसिपल एक्ट हरिद्वार।इन बोर्डों पर किसी संस्था का नाम नहीं था, लेकिन संदेश साफ था। और यही संदेश अब पूरे उत्तराखंड में चर्चा का विषय बन चुका है।

हरिद्वार से चारधाम तक उठी मांग

हर की पैड़ी की जिम्मेदारी संभालने वाली श्री गंगा सभा ने इस पहल की शुरुआत की। इसके बाद मांग उठी कि केदारनाथ, बद्रीनाथ समेत 47 प्रमुख तीर्थस्थलों पर भी गैर हिंदुओं के प्रवेश पर रोक लगाई जाए।चारधाम से जुड़ी समितियों ने प्रस्ताव तैयार करने की बात कही है। राज्य सरकार ने भी साफ संकेत दिए हैं कि वह धार्मिक समितियों के निर्णय का सम्मान करेगी। मुख्यमंत्री पुष्कर धामी ने कहा कि संत समाज और संबंधित समितियां जो तय करेंगी, सरकार उसी दिशा में कदम उठाएगी। इसके लिए 1916 के हरिद्वार म्युनिसिपल एक्ट का अध्ययन भी किया जा रहा है।यानी मामला अब सिर्फ एक बोर्ड तक सीमित नहीं है, बल्कि एक बड़े फैसले की ओर बढ़ रहा है।

मांग क्यों उठी?

श्री गंगा सभा के अध्यक्ष नितिन गौतम का कहना है कि यह कोई नई मांग नहीं है। उनके अनुसार, हरिद्वार के लिए पहले से बने कानून में यह प्रावधान मौजूद है, बस उसका पालन नहीं हो रहा था। उनका तर्क है कि हिंदुओं के तीर्थस्थलों की पवित्रता बनाए रखने के लिए यह कदम जरूरी है।वे कहते हैं कि तीर्थस्थल कोई पर्यटन स्थल नहीं हैं, बल्कि आस्था के केंद्र हैं। यहां आने वाले लोगों की भावना और उद्देश्य पवित्र होना चाहिए।

बद्रीनाथ-केदारनाथ में भी तैयारी

बद्रीनाथ-केदारनाथ मंदिर समिति के अध्यक्ष हेमंत द्विवेदी ने भी साफ कहा है कि इन धामों की स्थापना आदि शंकराचार्य की वैदिक परंपरा के तहत हुई थी और यहां की पूजा पद्धति, नियम और मर्यादा को बनाए रखना समिति का कर्तव्य है।उनका कहना है कि जैसे ही बद्रीनाथ धाम के कपाट खुलने की तारीख आएगी, उससे पहले समिति की बैठक में इस प्रस्ताव पर मुहर लग सकती है।उन्होंने यह भी कहा कि तीर्थस्थलों के बारे में निर्णय लेने का अधिकार संबंधित समितियों को है और सुप्रीम कोर्ट भी ऐसे मामलों में धार्मिक समितियों के अधिकार को मान्यता दे चुका है।

रोज़ी-रोटी का सवाल

लेकिन इस फैसले का एक दूसरा पहलू भी है और वह है हजारों परिवारों की रोज़ी-रोटी।चारधाम यात्रा के दौरान लाखों श्रद्धालु आते हैं। इस पूरी व्यवस्था में 10 से 15 हजार लोग सीधे तौर पर जुड़े हैं। इनमें घोड़ा-खच्चर चलाने वाले, डांडी-कंडी वाले, होटल-रेस्टोरेंट में काम करने वाले कर्मचारी, ड्राइवर और सुरक्षाकर्मी शामिल हैं।केदारनाथ में ही करीब 8 हजार से ज्यादा टट्टू और डांडी-कंडी ऑपरेटर रजिस्टर्ड हैं। असल संख्या इससे भी ज्यादा हो सकती है। यात्रा मार्ग पर सैकड़ों होटल और ढाबे चलते हैं। इन जगहों पर काम करने वालों में बड़ी संख्या मुस्लिम समुदाय से है।अगर प्रतिबंध सख्ती से लागू हुआ, तो इन परिवारों की आमदनी पर सीधा असर पड़ेगा।गौरीकुंड के एक होटल कर्मचारी कहते हैं, "हम यहां काम करने आते हैं, पूजा करने नहीं। अगर काम बंद हुआ तो घर कैसे चलेगा?"यह सवाल सिर्फ उनका नहीं, बल्कि हजारों लोगों का है।

कुंभ और अर्धकुंभ पर क्या होगा?

2027 में होने वाले अर्धकुंभ को लेकर भी सवाल उठ रहे हैं। अगर नियम लागू हुआ तो क्या गैर हिंदुओं को वहां भी प्रवेश नहीं मिलेगा?कुछ धार्मिक नेताओं का कहना है कि नियम सभी पर समान रूप से लागू होंगे। वहीं दूसरी ओर उत्तराखंड वक्फ बोर्ड के चेयरमैन शादाब शम्स ने इस प्रस्ताव का समर्थन करते हुए कहा कि जैसे मक्का में गैर मुस्लिमों का प्रवेश वर्जित है, वैसे ही अगर हिंदू तीर्थस्थलों पर नियम बनाए जा रहे हैं तो उसमें गलत क्या है?

आस्था बनाम समावेशिता

यह मुद्दा सिर्फ कानून या धर्म का नहीं है, बल्कि समाज की संवेदनशीलता का भी है।एक ओर लोग कहते हैं कि तीर्थस्थलों की पवित्रता सर्वोपरि है। दूसरी ओर कुछ लोग सवाल उठाते हैं कि क्या यह कदम सामाजिक समरसता पर असर डालेगा? क्या इससे समाज में दूरी बढ़ेगी?हरिद्वार के एक बुजुर्ग श्रद्धालु गंगा किनारे बैठे कहते हैं, "यह देवभूमि है, यहां शांति रहनी चाहिए। फैसला ऐसा हो जो आस्था भी बचाए और इंसानियत भी।"

हरिद्वार म्युनिसिपल एक्ट आज फिर चर्चा में

1916 का हरिद्वार म्युनिसिपल एक्ट आज फिर चर्चा में है। धार्मिक समितियां कह रही हैं कि वे सिर्फ पुराने नियमों को लागू करना चाहती हैं। सरकार अध्ययन कर रही है।लेकिन असली चुनौती यह है कि फैसले का असर सिर्फ कागज पर नहीं, बल्कि जमीन पर पड़ेगा। जहां हजारों लोग रोज अपनी जिंदगी की जद्दोजहद में लगे हैं।हर की पैड़ी पर लगे बोर्ड ने एक बड़ा सवाल खड़ा कर दिया है ,क्या तीर्थस्थलों की मर्यादा की रक्षा के लिए प्रवेश प्रतिबंध जरूरी है?

या फिर समाधान ऐसा होना चाहिए जो आस्था और आजीविका दोनों के बीच संतुलन बनाए?देवभूमि उत्तराखंड आज एक ऐसे मोड़ पर खड़ा है, जहां हर फैसला दूरगामी असर डालेगा।गंगा की धारा की तरह यहां बहस भी तेज है।लेकिन उम्मीद यही है कि जो भी निर्णय हो, वह समाज को बांटने के बजाय जोड़ने वाला हो क्योंकि अंत में, आस्था का सबसे बड़ा आधार इंसानियत ही है।

MN DIVINE

ORDER ALL TYPES OF :

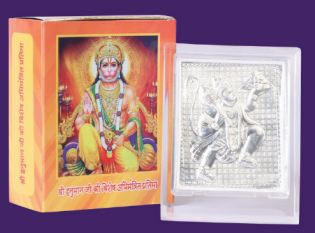

- POOJA SAMAGRI,
- AYURVEDIC MEDICINE
- AND PRATIMA.

NOW GET AT YOUR HOME ON

MNDIVINE.COM

ORDER NOW

https://mndivine.com/

HELPLINE : 9667793986
(10AM TO 6PM, MON-SAT)

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम
भारत श्री

दिल्ली से उठा डिजिटल भविष्य का संदेश

पीएम मोदी ने रखा समावेशी तकनीक का विजन

@ अभिषेक चौबे

दिल्ली की ठंडी सुबह, लेकिन माहौल गर्म था विचारों से, तकनीक से और भविष्य की संभावनाओं से। विज्ञान भवन के बाहर दुनिया भर से आए प्रतिनिधियों की हलचल थी। कोई अफ्रीका से आया था, कोई यूरोप से, कोई एशिया के छोटे से देश का मंत्री था तो कोई दुनिया की बड़ी टेक कंपनी का सीईओ। मौका था—इंडिया एआई इम्पैक्ट समिट 2026 का।पांच दिवसीय इस वैश्विक सम्मेलन के दूसरे दिन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने साफ शब्दों में कहा एआई का उद्देश्य सिर्फ तकनीकी प्रगति नहीं, बल्कि आम जनमानस का जीवन आसान बनाना है।उन्होंने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर एक वीडियो साझा करते हुए लिखा-"इंडिया एआई इम्पैक्ट एक्सपो 2026 विचारों, नवाचार और उद्देश्यों का एक सशक्त संगम था।"

एआई-सिर्फ मशीन नहीं, मानवता की सेवा का माध्यम

प्रधानमंत्री मोदी ने अपने संदेश में कहा कि बुद्धिमत्ता, तर्कसंगतता और निर्णय लेने की क्षमता विज्ञान और तकनीक को जनता के लिए उपयोगी बनाती है। उनका जोर इस बात पर था कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस यानी कृत्रिम बुद्धिमत्ता का इस्तेमाल केवल बड़े उद्योगों या अमीर देशों के लिए नहीं, बल्कि हर व्यक्ति के जीवन को बेहतर बनाने के लिए होना चाहिए।उन्होंने कहा कि यह शिखर सम्मेलन इसी सोच के साथ आयोजित किया गया है "कैसे एआई का उपयोग सभी के लाभ के लिए किया जाए।"उनके शब्दों में एक स्पष्ट संदेश था कि भारत तकनीक को सिर्फ शक्ति के रूप में नहीं, बल्कि सेवा के रूप में देखता है।

ग्लोबल साउथ में पहली बार इतना बड़ा आयोजन

यह सम्मेलन कई मायनों में ऐतिहासिक है। पहली बार एआई जैसे महत्वपूर्ण विषय पर इतना बड़ा वैश्विक सम्मेलन ग्लोबल साउथ के किसी देश में आयोजित हो रहा है।16 फरवरी से शुरू हुए इस समिट में 100 से अधिक सरकारी प्रतिनिधि भाग ले रहे हैं। इनमें 20 से अधिक राष्ट्राध्यक्ष, 60 मंत्री और उपमंत्री शामिल हैं। साथ ही 500 से ज्यादा वैश्विक एआई नेता सीईओ, शोधकर्ता, शिक्षाविद और उद्योग विशेषज्ञ एक मंच पर जुटे हैं।यह केवल तकनीकी चर्चा नहीं है, बल्कि यह विकास, समानता और सतत भविष्य की दिशा तय करने का प्रयास है।

दिशा तय करेगा भारत

समिट के दौरान 19 फरवरी को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी उद्घाटन भाषण देंगे, जो वैश्विक सहयोग की दिशा तय करेगा। इसमें भारत के उस दृष्टिकोण को रखा जाएगा, जिसमें एआई को जिम्मेदार, समावेशी और मानव-केंद्रित बनाया जाए।भारत का संदेश साफ है,तकनीक का विकास ऐसा हो जो समाज के हर वर्ग तक पहुंचे।इस शिखर सम्मेलन का एक बड़ा आकर्षण तीन प्रमुख वैश्विक प्रभाव चुनौतियां हैं-एआई फॉर ऑल। एआई बाय हर। युवआई।

इनका उद्देश्य है कि ऐसे एआई समाधान ढूंढना जो समाज के कमजोर वर्गों, महिलाओं और युवाओं के लिए नए अवसर पैदा करें।इन चुनौतियों के लिए 60 से अधिक देशों से 4650 से ज्यादा आवेदन आए। यह संख्या बताती है कि दुनिया भारत को एक भरोसेमंद और उभरते तकनीकी केंद्र के रूप में देख रही है।कठोर बहुस्तरीय मूल्यांकन के बाद तीनों श्रेणियों में शीर्ष 70 टीमों को फाइनलिस्ट चुना गया है। अब ये टीमें नीति निर्माताओं, उद्योग जगत के नेताओं और निवेशकों से जुड़ेंगी।

तकनीक से बदलती जिंदगी

सम्मेलन के दौरान एक युवा स्टार्टअप संस्थापक ने बताया कि कैसे उनका एआई मॉडल ग्रामीण इलाकों में किसानों को मौसम की सटीक जानकारी देता है। एक अन्य टीम ने एआई आधारित हेल्थ प्लेटफॉर्म बनाया है, जो दूरदराज के गांवों में बीमारी की पहचान में मदद करता है।एक महिला उद्यमी ने साझा किया कि एआई बाय हर पहल ने उन्हें अपने छोटे से शहर से निकलकर वैश्विक मंच तक पहुंचने का मौका दिया।यह सम्मेलन सिर्फ कोड और एल्गोरिद्म की बात नहीं कर रहा, बल्कि उन चेहरों की बात कर रहा है जिनकी जिंदगी बदल सकती है।

भारत का उभरता वैश्विक नेतृत्व

आज भारत सिर्फ आईटी सेवा प्रदाता देश नहीं है। वह नीति निर्माण, जिम्मेदार तकनीक और नैतिक एआई के क्षेत्र में भी नेतृत्व करने की कोशिश कर रहा है।विशेषज्ञों का मानना है कि अगर एआई को सही दिशा में इस्तेमाल

किया गया, तो यह शिक्षा को सुलभ बना सकता है। स्वास्थ्य सेवाओं को मजबूत कर सकता है। कृषि को स्मार्ट बना सकता है। और प्रशासन को पारदर्शी बना सकता है। भारत का मॉडल यह है कि तकनीक का लोकतंत्रीकरण हो। यानी वह कुछ लोगों तक सीमित न रहे।

मानवीय मूल्यों के बीच संतुलन

हालांकि एआई के फायदे कई हैं, लेकिन इसके साथ चुनौतियां भी हैं ,डाटा सुरक्षा, निजता, रोजगार पर असर और नैतिकता जैसे मुद्दे गंभीर हैं।इसीलिए सम्मेलन में बहुपक्षीय संस्थानों और नीति निर्माताओं को भी शामिल किया गया है, ताकि तकनीकी प्रगति और मानवीय मूल्यों के बीच संतुलन बनाया जा सके।20 फरवरी को जब यह पांच दिवसीय सम्मेलन समाप्त होगा, तो केवल एक कार्यक्रम खत्म नहीं होगा—एक दिशा तय होगी।यह दिशा बताएगी कि आने वाले वर्षों में एआई केवल एक तकनीकी शब्द रहेगा या वास्तव में समाज की बेहतरी का साधन बनेगा।

प्रधानमंत्री मोदी के शब्दों मे-एआई का इस्तेमाल सबके फायदे के लिए होना चाहिए।यह वाक्य शायद इस पूरे समिट की आत्मा है।दिल्ली से उठी यह आवाज सिर्फ भारत तक सीमित नहीं है। यह संदेश पूरी दुनिया के लिए है-तकनीक तभी सार्थक है जब वह इंसान के काम आए।इंडिया एआई इम्पैक्ट समिट 2026 ने यह दिखाया है कि भारत डिजिटल भविष्य की दौड़ में केवल भाग नहीं ले रहा, बल्कि दिशा भी तय करना चाहता है।अब देखना यह है कि इस मंच से निकले विचार और संकल्प जमीन पर कितनी तेजी से उतरते हैं।

एपस्टीन फाइल्स पर फिर सियासी तूफ़ान

हिलेरी का ट्रंप प्रशासन पर हमला, सच कब आएगा सामने?

@ रिंकू विश्वकर्मा

बर्लिन की ठंडी शाम। दुनिया भर के नेता, विशेषज्ञ और नीति निर्माता वार्षिक वर्ल्ड फोरम की बैठक में जुटे थे। उसी मंच पर अमेरिका की पूर्व विदेश मंत्री हिलेरी क्लिंटन ने एक ऐसा बयान दिया, जिसने अटलांटिक के उस पार फिर से सियासी हलचल तेज कर दी।हिलेरी ने सीधे तौर पर अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के प्रशासन पर आरोप लगाया कि जेफ्री एपस्टीन से जुड़ी फाइलों को सार्वजनिक करने में निष्पक्षता नहीं बरती जा रही। उन्होंने कहा,"फाइल्स को बाहर आने दें। इन्हें सार्वजनिक किए जाने की रफ्तार बहुत धीमी है।"यह बयान सिर्फ एक राजनीतिक टिप्पणी नहीं था, बल्कि उस मामले की ओर इशारा था जिसने पिछले कई वर्षों से अमेरिका की राजनीति, न्याय व्यवस्था और उच्च वर्ग की नैतिकता पर सवाल खड़े किए हैं।

एपस्टीन मामला क्यों इतना बड़ा है?

जेफ्री एपस्टीन एक नाम जो कभी अमेरिका के प्रभावशाली लोगों की सूची में शामिल था। अरबपति फाइनेंसर, बड़े-बड़े नेताओं, उद्योगपतियों और मशहूर हस्तियों से करीबी संबंध। लेकिन 2019 में जब उन पर यौन तस्करी के गंभीर आरोप लगे और वे न्यूयॉर्क की जेल में मृत पाए गए, तो पूरा देश हिल गया।उनकी मौत को आधिकारिक तौर पर आत्महत्या बताया गया, लेकिन आज तक कई सवाल अनुत्तरित हैं। सबसे बड़ा सवाल—उनकी फाइलों में किन-किन बड़े नामों का जिक्र है? और क्या वे नाम कभी पूरी तरह सार्वजनिक होंगे?

हिलेरी का सीधा सवाल

बीबीसी से बातचीत में हिलेरी क्लिंटन ने कहा कि व्हाइट हाउस का यह दावा कि उसने डेमोक्रेट्स से ज्यादा फाइलें सार्वजनिक की हैं, पर्याप्त नहीं है। उनके मुताबिक, असली मुद्दा यह है कि पूरा सच सामने आए।उन्होंने यह भी कहा कि फाइल में किसी का नाम होना यह साबित नहीं करता कि उसने कोई अपराध किया है। लेकिन पारदर्शिता लोकतंत्र की बुनियाद है।हिलेरी का कहना था,"जिन्हें जरूरत है, उन्हें कांग्रेस के सामने जाकर अपनी गवाही देनी चाहिए।"उनका इशारा ब्रिटेन के प्रिंस एंड्रयू माउंटबेटेन-विंडसोर की ओर था, जिनका नाम भी इस मामले में जुड़ा रहा है। हालांकि एंड्रयू ने सभी आरोपों को खारिज किया है।

ट्रंप का जवाब-मेरा कोई लेना-देना नहीं

दूसरी ओर राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने इस पूरे मामले से खुद को पूरी तरह अलग बताया है। एयर फोर्स वन में मीडिया से बातचीत के दौरान उन्होंने कहा,

"मेरे पास छिपाने के लिए कुछ भी नहीं है। इस मामले में मुझे दोषमुक्त करार दिया जा चुका है। जेफ्री एपस्टीन से मेरा कोई लेना-देना नहीं है।"ट्रंप ने दावा किया कि उन्हें पूरी तरह आरोपमुक्त किया जा चुका है और इस मामले में उन्हें फंसाने की कोशिशें नाकाम रही हैं।फरवरी की शुरुआत में व्हाइट हाउस की प्रेस सचिव कैरोलिन लेविट ने भी कहा था कि ट्रंप ने अपने मार-ए-लागो क्लब से

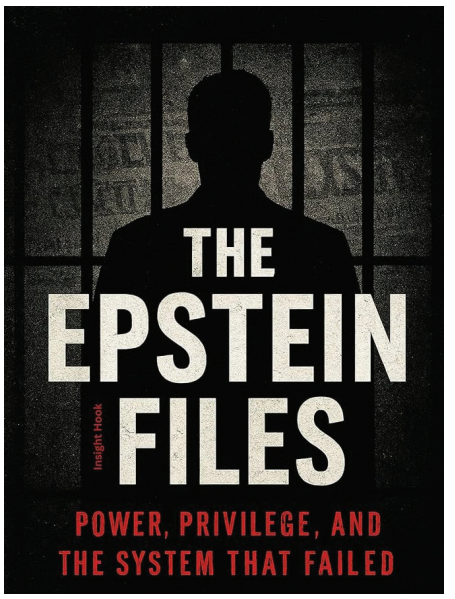

एपस्टीन को बाहर कर दिया था क्योंकि वे "डराने वाले व्यक्ति" जैसे थे।

राजनीति या पारदर्शिता की मांग?

इस बयानबाजी को सिर्फ डेमोक्रेट बनाम रिपब्लिकन की लड़ाई मान लेना आसान है। लेकिन असल सवाल इससे कहीं बड़ा है।अमेरिका जैसे लोकतांत्रिक देश में, जहां पारदर्शिता और जवाबदेही की बात की जाती है, वहां अगर किसी मामले में शक्तिशाली लोगों के नाम सामने आते हैं, तो जनता जानना चाहती है कि सच्चाई क्या है।एपस्टीन का मामला सिर्फ एक व्यक्ति का नहीं है। यह उस सिस्टम की जांच है, जिसमें ताकतवर लोग वर्षों तक कानून से बचते रहे या उन पर सवाल उठते

रहे।जनता के मन में सवालआज भी अमेरिका में आम लोग पूछते हैं-एपस्टीन की मौत की पूरी सच्चाई क्या है?उनकी फाइलों में किन-किन प्रभावशाली लोगों के नाम हैं?क्या वे सभी नाम कभी सार्वजनिक होंगे?कई लोगों का मानना है कि इस मामले में पूरी पारदर्शिता न होने से भरोसा कमजोर होता है।

क्लिंटन परिवार का नाम भी चर्चा में

यह भी सच है कि 1990 और 2000 के दशक में बिल क्लिंटन समेत कई बड़े नेताओं के एपस्टीन से संबंध रहे थे। हालांकि उनके खिलाफ किसी प्रकार की आपराधिक गड़बड़ी का आरोप साबित नहीं हुआ है।हिलेरी क्लिंटन ने भी स्पष्ट किया कि फाइल में नाम होना अपराध साबित नहीं करता। लेकिन उनका जोर इस बात पर है कि जनता को जानकारी मिलनी चाहिए।इस पूरे राजनीतिक शोर के बीच एक पहलू अक्सर दब जाता है-वे महिलाएं और लड़कियां, जिन्होंने आरोप लगाया कि वे एपस्टीन के शोषण का शिकार हुईं।उनके लिए यह मामला सिर्फ राजनीति नहीं है। यह न्याय की लड़ाई है। वे चाहती हैं कि सच सामने आए, चाहे वह कितना भी असहज क्यों न हो।उनके लिए हर बयान, हर देरी और हर फाइल की चर्चा मायने रखती है।

क्या फाइलें पूरी तरह सार्वजनिक होंगी?

अभी तक कुछ दस्तावेज जारी किए गए हैं, लेकिन आलोचकों का कहना है कि यह पूरी तस्वीर नहीं है। कई हिस्से अब भी सीलबंद हैं या संपादित रूप में जारी हुए हैं।हिलेरी का कहना है कि "गति बहुत धीमी है।"ट्रंप प्रशासन का कहना है कि कानून के तहत जितना संभव है, उतना किया जा रहा है।अमेरिका में चुनावी माहौल और राजनीतिक ध्रुवीकरण के बीच यह मुद्दा फिर से गर्म हो सकता है। कांग्रेस में सुनवाई, नए दस्तावेज और मीडिया की जांच-सब कुछ इस कहानी को आगे बढ़ा सकते हैं।लेकिन असली परीक्षा यह है कि क्या सत्ता में बैठे लोग पूरी पारदर्शिता दिखा पाएंगे?

एपस्टीन अब इस दुनिया में नहीं हैं। लेकिन उनके नाम से जुड़ा विवाद अभी जिंदा है।हिलेरी क्लिंटन का बयान इस बहस को फिर सामने ले आया है। ट्रंप अपनी बेगुनाही दोहरा रहे हैं। राजनीतिक दल एक-दूसरे पर आरोप लगा रहे हैं। लेकिन अंत में, यह मामला सत्ता से ज्यादा सच का है।जब तक हर सवाल का जवाब साफ और सार्वजनिक नहीं होगा, तब तक यह मुद्दा अमेरिकी राजनीति पर एक छाया की तरह बना रहेगा।

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम
भारत श्री

महाशिवरात्रि पर महाविजय!

भारत ने पाकिस्तान को 61 रन से रौंदा, सुपर-8 में धमाकेदार एंट्री

@ मनीष पांडेय

कोलंबो के आर प्रेमदासा स्टेडियम में रविवार की शाम सिर्फ एक मैच नहीं खेला गया, एक जज़्बा जिया गया। जब भारत और पाकिस्तान आमने-सामने हों, तो मुकाबला सिर्फ रन और विकेट का नहीं होता,यह भावनाओं, उम्मीदों और करोड़ों दिलों की धड़कनों का होता है।और इस बार मैदान पर जो हुआ, उसने हर भारतीय चेहरे पर मुस्कान ला दी। टीम इंडिया ने पाकिस्तान को 61 रनों से हराकर न सिर्फ मैच जीता, बल्कि टी20 वर्ल्ड कप के सुपर-8 में भी दमदार एंट्री कर ली।

इशान का तूफान, जिसने मैच की दिशा बदल दी

टॉस के बाद जब भारत ने पहले बल्लेबाज़ी शुरू की, तो पिच स्पिन के लिए मददगार दिख रही थी। शुरुआत में विकेट गिरा, तो लगा कि रन बनाना आसान नहीं होगा। लेकिन तभी क्रीज़ पर आए इशान किशन और देखते ही देखते मैच का रंग बदल गया।इशान ने सिर्फ 40 गेंदों में 77 रन ठोक दिए। उनकी पारी में 10 चौके और 3 गगनचुंबी छक्के शामिल थे। हर शॉट में आत्मविश्वास था, हर रन में इरादा साफ था आज हम पीछे नहीं हटेंगे।तिलक वर्मा के साथ दूसरे विकेट के लिए 87 रन की साझेदारी ने भारतीय पारी को मजबूत आधार दिया। तिलक ने 25 रन बनाए, लेकिन उनकी भूमिका अहम रही। कप्तान सूर्यकुमार यादव ने 32 रन की सधी हुई पारी खेली, जबकि शिवम दुबे ने 27 रन जोड़कर स्कोर को आगे बढ़ाया।अंत में भारत ने 7 विकेट पर 175 रन का चुनौतीपूर्ण स्कोर खड़ा किया।

पाकिस्तान की उम्मीदें और भारतीय गेंदबाजों की धार

176 रन का लक्ष्य बड़ा तो था, लेकिन असंभव नहीं। पाकिस्तान की टीम जब मैदान पर उतरी, तो उनके समर्थकों को उम्मीद थी कि बाबर आज़म या कोई और बल्लेबाज़ बड़ा खेल दिखाएगा।लेकिन भारतीय गेंदबाज़ों ने शुरुआत से ही साफ कर दिया कि आज रात उनकी है।हार्दिक पंड्या ने अपनी तेज़ और सटीक गेंदबाज़ी से दबाव बनाया। जसप्रीत बुमराह की गेंदें हमेशा की तरह रफ्तार और सटीक लाइन-लेंथ के साथ बल्लेबाज़ों को परेशान करती रहीं। वरुण चक्रवर्ती की स्पिन ने मिडिल ऑर्डर को जकड़ लिया। अक्षर पटेल ने भी किफायती ओवर डाले।पाकिस्तान की पूरी टीम सिर्फ 18 ओवर में 114 रन पर सिमट गई। उस्मान खान ने 44 रन बनाकर कुछ देर संघर्ष किया। शाहीन अफरीदी ने नाबाद 23 रन बनाए, लेकिन टीम को जीत तक ले जाने वाला कोई नहीं मिला।हर विकेट के साथ स्टेडियम में भारत माता की जय के नारे गूंजते रहे।रिकॉर्ड जो कहानी कहते हैं इस जीत के साथ भारत ने टी20 वर्ल्ड कप में पाकिस्तान के खिलाफ अपना रिकॉर्ड 8-1 कर लिया। यानी नौ मुकाबलों में आठ बार जीत भारत के नाम।सिर्फ इतना ही नहीं रनों के अंतर से यह पाकिस्तान के खिलाफ भारत की टी20 अंतरराष्ट्रीय में सबसे बड़ी जीत है।ये आंकड़े सिर्फ नंबर नहीं हैं, ये उस निरंतरता की कहानी हैं, जो टीम इंडिया ने बड़े मुकाबलों में दिखाई है।

ड्रेसिंग रूम से लेकर घरों तक जश्न

मैच खत्म होते ही खिलाड़ियों के चेहरों पर संतोष साफ दिख रहा था। इशान किशन को साथी खिलाड़ियों ने गले लगाया। बुमराह और हार्दिक मुस्कुराते नजर आए। कप्तान सूर्यकुमार यादव ने हाथ उठाकर दर्शकों का अभिवादन किया।लेकिन असली जश्न सिर्फ स्टेडियम तक सीमित नहीं था। भारत के हर शहर, हर गली और हर घर में टीवी के सामने बैठे लोग खुशी से झूम उठे।दिल्ली में पटाखे फूटे, मुंबई में लोग सड़कों पर उतर आए, छोटे-छोटे कस्बों में भी बच्चों ने तिरंगा लहराया।भारत-पाक मुकाबला हमेशा भावनाओं से भरा होता है। और जब जीत इतनी एकतरफा हो, तो खुशी दोगुनी हो जाती है।

मैच की असली कहानी

अगर इस जीत को एक शब्द में समेटना हो, तो वह होगा टीम वर्क।इशान का अर्धशतक, तिलक की साझेदारी, सूर्यकुमार की कप्तानी, हार्दिक और बुमराह की गेंदबाज़ी हर खिलाड़ी ने अपना योगदान दिया। यही वजह है कि टीम इंडिया सिर्फ एक स्टार पर निर्भर नहीं दिखी, बल्कि एक मजबूत इकाई के रूप में उभरी।पाकिस्तान के लिए यह हार सिर्फ एक मैच की हार नहीं है, बल्कि उन्हें अपनी रणनीति पर फिर से सोचने की जरूरत का संकेत भी है। बल्लेबाज़ी क्रम दबाव में बिखर गया। गेंदबाज़ों ने शुरुआती ओवरों में लय खो दी।हालांकि टूर्नामेंट अभी बाकी है, लेकिन यह मुकाबला उनके लिए एक बड़ा झटका जरूर रहा।

सुपर-8 की राह पर आत्मविश्वास

इस जीत के साथ भारत ने सुपर-8 में अपनी जगह पक्की कर ली है। यह सिर्फ क्वालीफिकेशन नहीं, बल्कि एक बयान है-टीम इंडिया खिताब की दावेदार है।

जिस आत्मविश्वास के साथ खिलाड़ियों ने मैदान पर प्रदर्शन किया, उससे साफ है कि टीम लय में है। अगर यही जोश और संतुलन बना रहा, तो आगे की राह और भी सुनहरी हो सकती है।मैच के बाद एक छोटा सा दृश्य दिल छू गया। स्टैंड में बैठे एक बुजुर्ग फैन, जिनके हाथ में तिरंगा था, कैमरे में मुस्कुराते हुए दिखे। उनकी आंखों में खुशी थी-शायद इस जीत से जुड़ी यादें, पुरानी जीतों की झलक, और आने वाले कल की उम्मीद।क्रिकेट सिर्फ खेल नहीं है। यह पीढ़ियों को जोड़ने वाला धागा है। भारत-पाक मुकाबला तो खासकर दिलों को एक साथ धड़कने पर मजबूर कर देता है।कोलंबो की यह रात लंबे समय तक याद रखी जाएगी।इशान किशन की धमाकेदार पारी, गेंदबाज़ों की धार, 61 रन की बड़ी जीत और सुपर-8 का टिकट सब कुछ एक ही शाम में मिल गया।टीम इंडिया ने न सिर्फ मैच जीता, बल्कि करोड़ों भारतीयों के दिल भी जीत लिए।

राष्ट्रीय हिंदी साप्ताहिक

भारत श्री

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम

सोमवार, 16 फरवरी 2026 , विक्रम संवत 2080

क्या लोकतंत्र एक और संकट से बच गया?

पिछले दो दिनों में भारत की लोकतांत्रिक व्यवस्था एक कदम और आगे बढ़ते बढ़ते रुक गई। ११ वर्ष पहले भी प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह को सदन में बोलने से रोका गया था उस समय भी मैंने मनमोहन सिंह का खुला पक्ष लिया था और मैं इसे गलत माना था लेकिन पिछले दो दिनों की घटना उस ११ वर्ष पहले की घटना से कई गुना अधिक खतरनाक होने जा रही थी जो किसी कारण से रुक गई। बहुत बारीकी से योजना बनाई गई थी और योजना अनुसार ६ महिला सांसदों को इस कार्य के लिए बाकायदा तैयार किया गया था जिनमे आर सुधा ज्योति मनी वर्षा गायकवाड गण ब्रायन ठाकुर के काव्य और शोभा बचाओ के नाम सुने जा रहे हैं । अभी तक यह पता नहीं है कि उन्हें राहुल के कराते की ट्रेनिंग दी गई थी या नहीं लेकिन यह बात साफ है कि सभी पूरी तरह तैयार होकर गई थी और ऐसी संभावना है कि वह प्रधानमंत्री को चूड़ियां भेंट कर सकती थी लेकिन यह भेद लोकसभा अध्यक्ष को किसी तरह मालूम हो गया और उन्होंने प्रधानमंत्री को आने से रोक दिया। तत्काल ही प्रियंका गांधी ने भी स्पष्ट किया कि प्रधानमंत्री को शारीरिक क्षति पहुंचाने की कोई योजना नहीं थी । मैं मानता हूं कि ऐसी कोई योजना नहीं थी लेकिन यदि यह घटना इस तरह हुई होती तो किसी भी तरह का विस्फोट हो सकता था सुरक्षा गार्ड बल प्रयोग कर सकते थे अफरा तफरी मच सकती थी लड़की हूं लड़ सकती हूं का पहला प्रयोग भी हो सकता था ।परिणाम कितने भी भयंकर हो सकते थे और शायद दलदली लोकतंत्र का अंतिम अध्याय इस घटना के बाद पूरा हो जाता लेकिन देखिए धीरे-धीरे लोकतंत्र कहां तक पहुंचता है। यदि इस लोकतंत्र के दलदल को दलविहीन लोकतंत्र में नहीं बदला गया तो हम इस प्रकार की घटनाओं की और अधिक पुनरावृति देखने के लिए बाध्य होंगे। क्योंकि सोनिया गांधी किसी भी सीमा तक जाने से परहेज नहीं करेंगी।

बजरंग मुनि

आस्था, अधिकार और आजीविका के बीच संतुलन की तलाश

@ **अनुराग पाठक**

16 जनवरी 2026 की सुबह हरिद्वार में एक साधारण-सी प्रतीत होने वाली घटना ने असाधारण बहस को जन्म दे दिया। हर की पैड़ी के घाटों पर लगे बोर्ड जिन पर गैर हिंदुओं के प्रवेश पर रोक का उल्लेख था और संदर्भ में हरिद्वार म्युनिसिपल एक्ट का हवाला ने देवभूमि की सीमाओं से निकलकर राष्ट्रीय विमर्श का रूप ले लिया। प्रश्न अब केवल एक स्थल का नहीं, बल्कि आस्था, अधिकार और सामाजिक संतुलन के व्यापक दायरे का है। हर की पैड़ी की व्यवस्था संभालने वाली श्री गंगा सभा का कहना है कि यह कदम तीर्थस्थलों की पवित्रता बनाए रखने के लिए आवश्यक है। उनका तर्क है कि तीर्थ, पर्यटन नहीं होते; वे साधना, श्रद्धा और धार्मिक अनुशासन के केंद्र होते हैं। यदि किसी स्थान की स्थापना विशेष वैदिक परंपरा और मर्यादाओं के अंतर्गत हुई है, तो वहां प्रवेश और आचरण के नियम भी उसी अनुरूप तय किए जाने चाहिए। इसी सोच के साथ मांग उठी है कि केदारनाथ और बद्रीनाथ सहित अन्य प्रमुख तीर्थस्थलों पर भी इसी प्रकार के प्रतिबंध लागू किए जाएं।

राज्य सरकार ने संकेत दिया है कि वह धार्मिक समितियों के निर्णय का सम्मान करेगी। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी का वक्तव्य इस दिशा में स्पष्ट है कि सरकार संत समाज और समितियों के मत के अनुरूप आगे बढ़ेगी। इसका अर्थ है कि यह मुद्दा केवल भावनात्मक प्रतिक्रिया नहीं, बल्कि संभावित नीति-निर्माण की दिशा में बढ़ता कदम है।

समर्थकों का पक्ष स्पष्ट है,तीर्थस्थलों की मर्यादा सर्वोपरि है। उनका कहना है कि जैसे अन्य धर्मों के कुछ पवित्र स्थलों पर प्रवेश संबंधी नियम होते हैं, वैसे ही हिंदू तीर्थों के लिए भी नियम तय करना अनुचित नहीं। वे इसे धार्मिक स्वतंत्रता और परंपरा की रक्षा का प्रश्न मानते हैं।किन्तु इस बहस का दूसरा पक्ष भी उतना ही महत्वपूर्ण है। चारधाम यात्रा केवल आध्यात्मिक आयोजन नहीं, बल्कि उत्तराखंड की अर्थव्यवस्था की जीवनरेखा भी है। यात्रा मार्ग पर हजारों लोग प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से निर्भर हैं। घोड़ा-खच्चर संचालक, डांडी-कंडी मजदूर, होटल कर्मचारी, ड्राइवर, दुकानदार और सुरक्षाकर्मी। इन श्रमिकों में विभिन्न समुदायों के लोग शामिल हैं। यदि प्रवेश संबंधी प्रतिबंध सख्ती से लागू होते हैं, तो उनकी आजीविका

पर प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है।यहां प्रश्न यह भी है कि क्या "प्रवेश" और "रोज़गार" को समान रूप से देखा जाएगा? क्या नियम केवल पूजा-अर्चना के लिए आए लोगों पर लागू होंगे या कार्य-निमित्त उपस्थित लोगों पर भी? नीति की सूक्ष्म रेखाएं अक्सर ज़मीन पर धुंधली हो जाती हैं। अतः किसी भी निर्णय से पहले उसके सामाजिक और आर्थिक प्रभावों का गंभीर आकलन आवश्यक है।

एक और आयाम संवैधानिक मूल्यों का है। भारत का संविधान धार्मिक स्वतंत्रता का अधिकार देता है, साथ ही समानता और समावेशिता की भावना को भी संरक्षित करता है। धार्मिक संस्थाओं को अपने आंतरिक प्रबंधन का अधिकार है, परंतु यह अधिकार सामाजिक संतुलन और व्यापक कानून व्यवस्था के संदर्भ में परखा जाता है। ऐसे में संतुलन साधना आसान नहीं होगा।इस बहस को केवल पक्ष-विपक्ष के द्वंद्व में सीमित करना उचित नहीं। यह संवेदनशील मुद्दा है, जहां भावनाएं गहरी हैं और हित व्यापक। तीर्थस्थलों की गरिमा बनाए रखना आवश्यक है, परंतु समाज में विश्वास और सौहार्द भी उतना ही महत्वपूर्ण है। यदि निर्णय संवाद, पारदर्शिता और स्पष्ट दिशा-निर्देशों के साथ लिया जाए, तो भ्रम और टकराव की आशंका कम होगी।

देवभूमि उत्तराखंड आज एक ऐसे मोड़ पर खड़ा है, जहां हर फैसला दूरगामी प्रभाव डालेगा। गंगा की धारा की तरह यहां विचारों की धारा भी प्रबल है। आवश्यकता इस बात की है कि आस्था की रक्षा करते हुए आजीविका और सामाजिक समरसता को भी समान महत्व दिया जाए। निर्णय चाहे जो हो, वह जोड़ने वाला होना चाहिए, क्योंकि अंततः किसी भी पवित्र स्थल की सबसे बड़ी शक्ति केवल उसकी परंपरा नहीं, बल्कि वहां आने वाले लोगों की साझा आस्था और मानवता होती है।

जुबानी तीर

"**जेफ्री** एपस्टीन का मामला बेहद गंभीर था और कानून ने अपना काम किया। जिन लोगों ने अपराध किया है, उन्हें जवाबदेह ठहराया जाना चाहिए। हमारे देश में कानून से ऊपर कोई नहीं है। यह जरूरी है कि सच्चाई सामने आए और पीड़ितों को न्याय मिले।

डोनाल्ड ट्रंप, राष्ट्रपति, अमेरिका

"**एपस्टीन** प्रकरण ने दिखाया कि सत्ता और प्रभाव का दुरुपयोग किस हद तक हो सकता है। हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि ऐसी घटनाएं दोबारा न हों। हमारी प्राथमिकता पीड़ितों को न्याय, पारदर्शिता और संस्थागत जवाबदेही सुनिश्चित करना है।

जो बाइडेन,पूर्व राष्ट्रपति, अमेरिका

"**एपस्टीन** जैसे मामलों से वैश्विक स्तर पर यह संदेश जाता है कि यौन शोषण और मानव तस्करी के खिलाफ सख्त कार्रवाई आवश्यक है। किसी भी प्रभावशाली व्यक्ति को कानून से छूट नहीं मिलनी चाहिए। अंतरराष्ट्रीय सहयोग और सख्त कानूनी ढांचा ही ऐसे अपराधों पर अंकुश लगा सकता है।

ऋषि सुनक, पूर्व प्रधानमंत्री, ब्रिटेन

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. महिमा मक्कर द्वारा एच0टी0 मीडिया, प्लॉट नं. 8, उद्योग विहार, ग्रेटर नोएडा-9 उत्तर प्रदेश से मुद्रित एवं जी. एफ. 5/115, गली नं. 5 संत निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009 से प्रकाशित । संपादकः महिमा मक्कर, RNI No. DELHI/2019/77252, संपर्क 011-43563154

विज्ञापन एवं वार्षिक सब्सक्रिप्शन के लिए ऑफिस के पते पर सम्पर्क करें या फिर इन नम्बरों - 9667793987 या 9667793985 पर बात करें या इस पर media@ bharatshri.com ईमेल करें।

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम
भारत श्री

कब्ज से परेशान?

जानिए आयुर्वेद क्या कहता है और कैसे पाएं प्राकृतिक राहत

अलार्म बज चुका है, दिन की शुरुआत हो चुकी है, लेकिन पेट साफ न हो तो पूरा दिन भारी लगने लगता है। चिड़चिड़ापन, पेट फूलना, सिरदर्द, गैस और थकान। कब्ज (Constipation) एक ऐसी समस्या है जो धीरे-धीरे शरीर और मन दोनों को प्रभावित करती है।आज की भागदौड़ भरी जिंदगी, गलत खानपान, कम पानी और तनाव ने कब्ज को आम समस्या बना दिया है। लेकिन अच्छी बात यह है कि आयुर्वेद में इसका सरल, प्राकृतिक और स्थायी समाधान मौजूद है।

आयुर्वेद के अनुसार कब्ज क्या है?

आयुर्वेद में कब्ज को "विबंध" कहा गया है। यह मुख्य रूप से वात दोष के असंतुलन के कारण होता है। जब शरीर में वात बढ़ जाता है तो आंतों की गति धीमी हो जाती है, जिससे मल सूख जाता है और बाहर निकलने में कठिनाई होती है। आयुर्वेद मानता है कि पाचन तंत्र का संतुलन बिगड़ना ही अधिकांश बीमारियों की जड़ है। इसलिए कब्ज का इलाज सिर्फ पेट साफ करना नहीं, बल्कि पूरे पाचन तंत्र को संतुलित करना है।

कब्ज के मुख्य कारण

देर रात तक जागना
पर्याप्त पानी न पीना
फाइबर की कमी
अधिक तला-भुना और जंक फूड
शारीरिक गतिविधि की कमी
मानसिक तनाव
बार-बार लैक्सेटिव दवाओं का सेवन

अगर इन कारणों पर ध्यान न दिया जाए तो कब्ज पुरानी समस्या बन सकती है।

आयुर्वेदिक इलाज: प्राकृतिक और सुरक्षित उपाय

1. त्रिफला चूर्ण – सबसे लोकप्रिय उपाय

त्रिफला तीन औषधियों—आंवला, हरड़ और बहेड़ा—का मिश्रण है।

कैसे लें: रात को सोने से पहले एक चम्मच त्रिफला गुनगुने पानी के साथ लें।

यह आंतों को साफ करता है और धीरे-धीरे पाचन शक्ति को मजबूत बनाता है।

2. इसबगोल की भूसी

इसबगोल प्राकृतिक फाइबर का अच्छा स्रोत है।

कैसे लें: एक से दो चम्मच इसबगोल रात को गुनगुने दूध या पानी के साथ लें।

यह मल को नरम बनाता है और आसानी से बाहर निकालने में मदद करता है।

3. गुनगुना पानी और नींबू

सुबह खाली पेट एक गिलास गुनगुने पानी में नींबू का रस मिलाकर पीने से पाचन तंत्र सक्रिय होता है।

यह शरीर से विषैले तत्व बाहर निकालने में भी सहायक है।

4. देसी घी का सेवन

आयुर्वेद में घी को पाचन के लिए लाभकारी माना गया है।

रात को सोने से पहले एक गिलास गुनगुने दूध में एक चम्मच घी मिलाकर पीने से मल त्याग आसान होता है।

5. एरंड (कैस्टर ऑयल)

पुरानी कब्ज में एरंड का तेल प्रभावी माना जाता है।

लेकिन इसे चिकित्सक की सलाह से ही लेना चाहिए, क्योंकि इसकी मात्रा नियंत्रित होती है।

6. आहार में बदलाव

आयुर्वेद कहता है—"जैसा अन्न, वैसा मन और तन।"

इसलिए भोजन में ये चीजें शामिल करें:

हरी पत्तेदार सब्जियां
पपीता, अमरूद, सेब
दलिया और ओट्स
साबुत अनाज
छाछ

तला-भुना, बहुत मसालेदार और प्रोसेस्ड फूड से बचें।

दिनचर्या भी है इलाज का हिस्सा

आयुर्वेद में सिर्फ दवा नहीं, दिनचर्या भी उतनी ही महत्वपूर्ण है।

सुबह जल्दी उठें
रोज 20–30 मिनट टहलें
योग और प्राणायाम करें
समय पर भोजन करें
भोजन को अच्छी तरह चबाएं
कब्ज के लिए योग और प्राणायाम

पवनमुक्तासन

यह आसन गैस और कब्ज में बेहद फायदेमंद है।

भुजंगासन

पाचन तंत्र को मजबूत करता है।

अनुलोम-विलोम

शरीर में वात दोष को संतुलित करता है।

रोजाना 15–20 मिनट योग करने से कुछ ही दिनों में फर्क दिख सकता है।

पानी की भूमिका

अक्सर लोग पानी कम पीते हैं, जिससे मल सूख जाता है।

दिन में कम से कम 8–10 गिलास पानी जरूर पिएं।

अगर संभव हो तो तांबे के बर्तन का पानी पीना लाभकारी माना जाता है।

बच्चों और बुजुर्गों में कब्ज

बच्चों में कब्ज अक्सर गलत खानपान या कम पानी की वजह से होती है।

बुजुर्गों में यह शारीरिक गतिविधि कम होने के कारण होती है।

इन दोनों ही स्थितियों में हल्के आयुर्वेदिक उपाय और संतुलित आहार बेहद फायदेमंद होते हैं।

कब डॉक्टर से संपर्क करें?

अगर कब्ज के साथ ये लक्षण हों तो तुरंत डॉक्टर से मिलें:

मल में खून
लगातार पेट दर्द
अचानक वजन घटना
कई दिनों तक मल त्याग न होना

आयुर्वेदिक उपचार सुरक्षित हैं, लेकिन गंभीर स्थिति में विशेषज्ञ की सलाह जरूरी है।

मानसिक स्वास्थ्य का भी है संबंध

तनाव और चिंता का सीधा असर पाचन तंत्र पर पड़ता है।

इसलिए ध्यान, मेडिटेशन और सकारात्मक सोच भी कब्ज से राहत दिलाने में मददगार हैं।

प्राकृतिक रास्ता ही स्थायी समाधान

कब्ज एक आम समस्या है, लेकिन इसे नजरअंदाज करना ठीक नहीं।

बार-बार दवाइयों पर निर्भर रहने के बजाय आयुर्वेदिक और प्राकृतिक उपाय अपनाना ज्यादा सुरक्षित और स्थायी है।

संतुलित आहार, नियमित दिनचर्या, पर्याप्त पानी और थोड़ी सी शारीरिक गतिविधि—ये छोटे कदम बड़ी राहत दे सकते हैं।

याद रखिए, स्वस्थ पाचन ही स्वस्थ जीवन की नींव है।

अगर सुबह हल्की और सहज हो, तो दिन भी मुस्कान के साथ बीतता है।

महात्मा चंद्रशेखर भारती: परमात्मा की आत्मविभूति

परमात्मा का आत्माभिव्यंजन लोक कल्याण के लिए निरंतर होता रहता है। उनकी दिव्य विभूति अवतरित होकर असंख्य प्राणियों को स्वरूप रस का सहज आस्वादन कराती है। संत चंद्रशेखर भारती ऐसी ही परमात्मा की आत्मविभूति थे। आदि शंकराचार्य की अद्वैत संत परंपरा की अविच्छिन्न श्रृंखला में वे एक मजबूत कड़ी थे। उन्होंने अनगिनत प्राणियों को आत्म रस की शीतल ज्योत्स्ना से तृप्त किया।

जन्म और परिवार का दिव्य वातावरण

संत चंद्रशेखर भारती का जन्म संवत् 1948 विक्रमी में कार्तिक कृष्ण अमावस्या को श्रृंगेरी में हुआ। उनके माता-पिता लक्ष्मी अम्बा और गोपाल शास्त्री बड़े धर्मनिष्ठ और सदाचार वाले थे। गोपाल शास्त्री उच्च कोटि के विद्वान थे। गोपाल के 14 पुत्र थे, लेकिन उनमें से केवल एक नरसिंह ही जीवित बचे। श्रृंगेरी मठ के अधिकारी श्रीकांत शास्त्री ने नरसिंह के पालन-पोषण का भार संभाला। नरसिंह को माध्यमिक विद्यालय में पढ़ने के लिए भेजा गया।

यह जन्म एक दिव्य संकेत था, जहां परमात्मा की कृपा से एक ऐसी आत्मा अवतरित हुई जो आगे चलकर जगत को आत्मिक प्रकाश देगी। परिवार का वातावरण इतना पवित्र था कि वह संत के जीवन की नींव बन गया।

गुरु की कृपा और उत्तराधिकार की प्राप्ति

जब नरसिंह केवल 12 साल के थे, तब उन पर जगद्गुरु शंकराचार्य सच्चिदानंद शिव अभिनव नरसिंह भारती की कृपा दृष्टि पड़ी। वे उनके कृपा पात्र बन गए। शंकराचार्य की आज्ञा से नरसिंह ने सद्विद्या संजीवनी पाठशाला में प्रवेश किया। आचार्य के आदेश से उन्होंने बंगलौर पाठशाला के मीमांसा विभाग में अध्ययन शुरू किया।

शंकराचार्य नरसिंह को बहुत मानते थे। उनकी तीव्र इच्छा थी कि वे नरसिंह को अपना उत्तराधिकारी घोषित करें। संवत् 1969 विक्रमी में शंकराचार्य का स्वास्थ्य गिरने लगा। उन्होंने नरसिंह को लाने के लिए बंगलौर आदमी भेजा। लेकिन नरसिंह के पहुंचने से पहले ही वे आत्मलीन हो गए। दक्षिण भारत के पवित्र श्रृंगेरी मठ के शंकराचार्य पद पर नरसिंह की चंद्रशेखर भारती के नाम से प्रतिष्ठा हुई। जगद्गुरु शंकराचार्य की उपाधि से सम्मानित होना उनके जीवन का एक अत्यंत महत्वपूर्ण अध्याय था।

यह उत्तराधिकार परमात्मा की लीला था, जहां गुरु की दिव्य इच्छा से एक नई ज्योति प्रज्वलित हुई। संत चंद्रशेखर भारती ने इस पद को ग्रहण कर अद्वैत के प्रकाश को और फैलाया।

आध्यात्मिक साधना और तप का मार्ग

अपने गुरु पूर्ववर्ती शंकराचार्य के चरण कमलों में उनकी अटूट निष्ठा और श्रद्धा थी। तीन साल की अवधि में गुरु की आत्म तुष्टि के लिए उन्होंने संपूर्ण वेदांत शास्त्र का अध्ययन पूरा कर लिया। वे सत्य के साक्षात्कार में लग गए। कठोर तप का आचरण अपनाया। आत्म चिंतन और परमात्मा के ध्यान में वे अपने समय का अधिकांश सदुपयोग करने लगे। संवत् 1976 विक्रमी में पिता और 1979 विक्रमी में माता ने परलोक गमन किया। ममता के बंधनों से मुक्त होकर संत चंद्रशेखर भारती आत्म अन्वेषण में लग गए।

वे दक्षिण भारत के पवित्र क्षेत्रों की यात्रा शुरू की। रामेश्वर, मदुरा, त्रिवेंद्रम और कालड़ी आदि में उन्होंने अद्वैत मत का प्रचार किया। यह साधना का ऐसा मार्ग था जहां हर पल परमात्मा की स्मृति में व्यतीत होता था, और जगत के कल्याण की भावना हृदय में बसी रहती थी।

चमत्कारी घटनाएं: परमात्मा की लीला

महात्मा चंद्रशेखर भारती में दूसरे के मन की बात जान लेने की अद्भुत क्षमता थी। एक दिन वे तीर्थ प्रसाद का वितरण कर रहे थे। एक व्यक्ति की उनसे उसी समय मिलने की बड़ी इच्छा थी। व्यक्ति के साथी ने कहा कि इस समय मिलना ठीक नहीं, 4 बजे शाम को मिलना अच्छा रहेगा। व्यक्ति दर्शनार्थियों में खड़ा होकर प्रसाद लेने लगा। संत भारती ने कहा कि आप आंध्र के अमुक ग्राम से आ रहे हैं। अच्छा, हम लोग 4 बजे शाम को बात करेंगे। व्यक्ति उनके मुख से ऐसी बात सुनकर आश्चर्यचकित हो गया कि भारती कभी आंध्र गए ही नहीं, उन्हें किस तरह मेरे ग्राम का पता चला और 4 बजे शाम को मिलने की बात तो और भी आश्चर्यजनक थी।

एक दिन एक व्यक्ति ने उनसे मद्रास जाने की आज्ञा मांगी। वह उनमें बड़ी श्रद्धा रखता था। संत भारती के पूछने पर कहा कि मद्रास में बहुत आवश्यक कार्य है। भारती ने कहा कि आवश्यक कार्य तो बीच में ही है। वह उनके आदेश से मद्रास के लिए चल पड़ा। लेकिन बीच में ही अरकोनम जंक्शन पर उसका पैर गाड़ी और प्लेटफॉर्म के बीच फिसल गया और प्राण जाने तक की आशंका थी, लेकिन मित्रों की सहायता से बच गया। अब वह संत भारती के कहने का आशय समझ सका। मद्रास से शीघ्र ही श्रृंगेरी लौट आया। कुछ भी काम न कर सका। संत भारती ने कहा कि मैं समझता हूं कि प्रातःकाल विशेष असुविधा नहीं हुई होगी।

एक दिन वे चरणामृत वितरण कर रहे थे। एक महिला व्यग्र थी, शांति भंग कर रही थी, उसकी लड़की की सोने की माला खो गई थी। किसी ने कहा कि अशांति मत फैलाओ, प्रसाद लेकर घर चले जाओ। महिला ने ऐसा ही करना चाहा, संत भारती ने उसे प्रसाद नहीं दिया और अलग खड़ी रहने का संकेत किया। इसे अपना अभाग्य समझकर वह बड़ी दुखी हुई। कुछ ही क्षणों के बाद एक बूढ़ी स्त्री प्रसाद लेने आई। संत भारती ने उसे से कहा कि माला दे दो। बुढ़िया ने कहा कि मेरे पास नहीं है। संत ने कहा कि अपने पाप मत बढ़ाओ। दूसरी महिलाओं ने बुढ़िया के पास से माला निकालकर पहली महिला को दे दी। संत भारती ने उसे प्रसाद दिया और उनकी कृपा से वह प्रसन्नतापूर्वक घर गई।

ये घटनाएं परमात्मा की लीला का प्रत्यक्ष प्रमाण हैं, जहां संत के माध्यम से दिव्य शक्ति प्रकट होती थी। संत चंद्रशेखर भारती का जीवन ऐसी अद्भुत घटनाओं से भरा था, जो जीवमात्र में आत्म दर्शन की भावना जगाती हैं।

उपदेश और शिक्षाओं की दिव्य धारा

उनकी उपदेश या शिक्षा देने की पद्धति अद्भुत और मौलिक थी। वे प्रायः मौन रहते थे, बहुत कम बोलते थे लेकिन उनके दो-चार शब्दों में ही इतनी शक्ति रहती थी कि सुनने वाले कभी भूलते ही नहीं थे। संत भारती वाद-

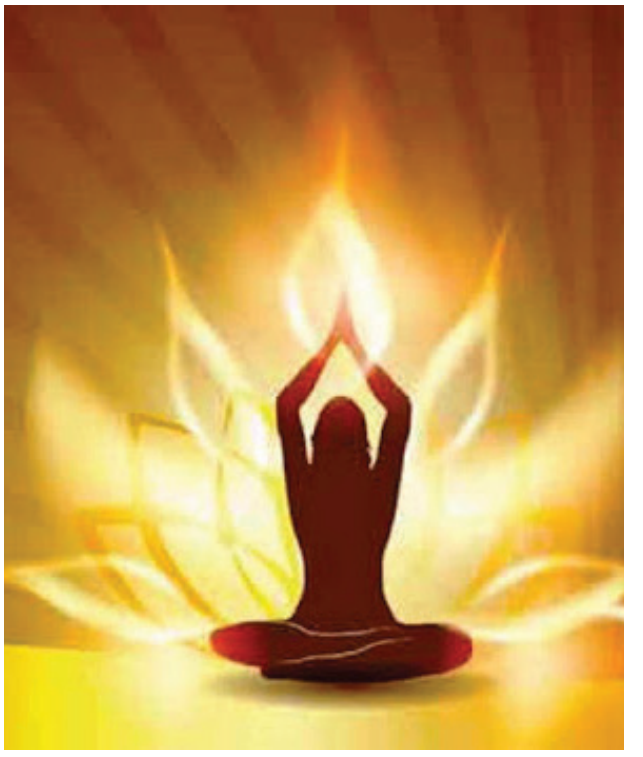

विवाद से बहुत दूर रहते थे। वे सार्वजनिक धर्मोपदेश को महत्व नहीं देते थे। व्यक्ति की शिक्षा-दीक्षा में उनकी रुचि थी। वे कहा करते थे कि सार्वजनिक भाषण से तनिक भी लाभ नहीं होता है। वे कहा करते थे कि लोगों को ब्रह्म तत्व की व्याख्या समझाना नितांत व्यर्थ है जब वे असत्य भाषण और असत्य आचरण तक नहीं छोड़ पाते हैं।

एक समय की बात है, उन्होंने एक पंडित से पूछा कि आप अमुक ग्रंथ का भाष्य तो कर रहे हैं न। पंडित जी ने कहा कि आपकी कृपा और आशीर्वाद से यह कार्य सुचारु रूप से चल रहा है। संत भारती ने दैनिक उपासना के संबंध में पूछा तो पंडित जी ने कहा कि मैं एक बड़े नगर में रहता हूं, उसमें उपले नहीं मिलते इसलिए अग्नि सुरक्षित रखकर उपासना करने की सुविधा ही नहीं मिलती है। संत भारती ने कहा कि बड़े नगर में गाय के दूध से आप चाय और कॉफी तो पी लेते हैं लेकिन गाय उपले नहीं दे सकती है। पंडित जी लज्जा से नत हो गए।

अद्वैत मार्गी होते हुए भी वे द्वैत सिद्धांत के पूर्ण मर्मज्ञ थे। भगवान के श्री विग्रह में उनकी अनुपम निष्ठा थी। एक समय की बात है कि एक ब्राह्मण भक्त ने संत भारती को अपनी पूजा की पेटिका दिखाई, वह ऐसा करके उनका आशीर्वाद पाना चाहता था। पेटिका में कई एक भगवद विग्रह थे। उनमें एक शालिग्राम विग्रह भी था। संत भारती ने विष्णु-अंश वाले उस विग्रह की ओर संकेत कर कहा कि आश्चर्य है कि भगवान 7 साल से भूखे हैं। ब्राह्मण उनकी बात से चकित हो गया। उसने विनम्रता से कहा कि पिता जी के देहांत के बाद मैं आज तक इस पेटी के सभी विग्रहों की पूजा-अर्चा करता आ रहा हूं। भारती ने कहा कि यह बात ठीक है लेकिन शालिग्राम विग्रह विशेष विष्णु विग्रह है। इस विग्रह को नित्य क्षीर अभिषेक और पायस निवेदन कराना चाहिए। ब्राह्मण को अब भारती की बात का महत्व समझ में आया। उसने कहा कि मेरे पिता का देहांत ठीक 7 साल पहले हो गया था, तब से मैं इस पेटी के सभी विग्रहों को समान रूप से नैवेद्य आदि अर्पित कर देता था। भारती ने कहा कि शालिग्राम विग्रह की यथाविधि पूजा भविष्य में करते रहना चाहिए। इस घटना से पता चलता है कि संत भारती की भगवान की प्रतिमा में कितनी निष्ठा थी।

चंद्रशेखर भारती की दृढ़ मान्यता थी कि धर्म का दरवाजा सबके लिए समान रूप से खुला हुआ है। यथाशक्ति प्रत्येक व्यक्ति धर्म का अनुगमन कर ब्रह्म तत्व का साक्षात्कार लाभ कर सकता है। संत भारती आत्मज्ञ थे, वे चराचर में अपनी ही आत्म अभिव्यक्ति का दर्शन करते थे।

एक समय की बात है। संत भारती श्रृंगेरी के शारदा मंदिर में पूजा करने जा रहे थे। दक्षिण द्वार के प्रवेश मार्ग पर एक गाय बैठी थी। मंदिर में प्रवेश करना कठिन था। संत भारती गाय के सम्मुख बैठ गए और पूजा की सारी सामग्री से उसी की पूजा करने लगे। पूजा समाप्त होने पर गाय खड़ी हो गई। भारती ने उसकी प्रदक्षिणा की, उसने मंदिर में जाने का रास्ता दे दिया। संत भारती के लिए गाय भगवती की सजीव प्रतिमा थी।

इसी तरह एक दिन चंद्रशेखर भारती मठ में ही चंद्रमौलीश्वर लिंग का अभिषेक कर रहे थे। अचानक एक भुजंग दिख पड़ा। वह फन उठाकर खड़ा हो गया। संत भारती ने प्याले में दूध लेकर उसे अपने हाथ से पिलाया। दूध पीने के बाद सांप ने लिंग की ओर देखा और संत भारती का अभिवादन कर चला गया। ये घटनाएं अकाट्य प्रमाण हैं कि संत भारती जीवमात्र में आत्म दर्शन करते थे।

संत भारती की सीख थी कि सदा ईश्वर को स्मरण करना चाहिए। नित्य उपासना करनी चाहिए। धन आदि की प्राप्ति के पीछे समय नहीं नष्ट करना चाहिए। मन में अनासक्ति और निरपेक्षता का भाव बढ़ाना चाहिए। भारती आत्म शांति पर बड़ा जोर देते थे। वे समस्त विकारों से अतीत होकर आत्मानंद के सागर में अपने आप निमग्न रहते थे। वे प्रपंचातीत रहकर भी जगत के प्राणियों के कल्याण की छोटी से छोटी बात का ध्यान रखते थे।

एक समय मठ का अधिकारी एक तार लेकर उनके पास आया। पूछने पर कहा कि ख का तार आया है, उसका भाई क बीमार है, वह रोग मुक्त होने के लिए आपकी कृपा चाहता है। भारती ने कहा कि तार ख का नहीं, क का है, ख बीमार है। तार पढ़ने पर अधिकारी को अपनी भूल का पता चला।

जल समाधि: दिव्य जीवन का समापन

संवत् 2011 विक्रमी की बात है। आश्विन अमावस्या रविवार को प्रातःकाल वे तुंगा सरिता में स्नान करने गए। एक शिष्य उनके पीछे-पीछे गया। शिष्य ने कहा कि आगे गहरा जल है। संत भारती ने कहा कि मुझे ज्ञात है। थोड़ी देर में उनका शरीर डूब गया। शिष्य ने बचाने की चेष्टा की लेकिन उसका शरीर भी नदी में बह गया। शिष्य तो बच गया लेकिन संत भारती ने जल समाधि ले ली। चंद्रशेखर भारती 20वीं शताब्दी के महान संतों में से एक थे, वे वास्तव में जगद्गुरु थे।

यह समापन परमात्मा में विलीन होने की दिव्य लीला था, जहां शरीर त्याग कर भी उनकी ज्योति अनंत काल तक प्रकाशित रहेगी।

रचनाएं: अमर उपदेश

उनकी रचनाएं उनके उपदेश ही हैं, जो अमर कृति के रूप में सुरक्षित हैं। ये उपदेश आत्मिक ज्ञान की अनमोल निधि हैं, जो अद्वैत के मार्ग को करती हैं।

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम
भारत श्री

सोना चमका, चांदी फिसली

बाजार में उतार-चढ़ाव के बीच निवेशकों की धड़कन तेज

@ सौम्या चौबे

सर्राफा बाजार इन दिनों एक अजीब मोड़ पर खड़ा है। एक तरफ सोना फिर से चमकने लगा है, तो दूसरी तरफ चांदी लगातार तीसरे कारोबारी दिन फिसल गई। कीमतों का यह खेल सिर्फ आंकड़ों तक सीमित नहीं है, बल्कि हर उस परिवार की उम्मीद और चिंता से जुड़ा है, जो सोने-चांदी को बचत और सुरक्षा की ढाल मानता है।

चांदी में लगातार गिरावट

16 फरवरी को चांदी की कीमत में लगातार तीसरे कारोबारी दिन गिरावट दर्ज की गई। इंडिया बुलियन एंड ज्वेलर्स एसोसिएशन के अनुसार, एक किलो चांदी 1,486 रुपए सस्ती होकर 2,40,947 रुपए प्रति किलो पर आ गई। इससे पहले शुक्रवार को यह 2,42,433 रुपए प्रति किलो थी।पिछले तीन कारोबारी दिनों में चांदी कुल 25,502 रुपए सस्ती हो चुकी है। यह गिरावट उन लोगों के लिए राहत लेकर आई है जो लंबे समय से चांदी खरीदने की सोच रहे थे, लेकिन ऊंची कीमतों के कारण रुक गए थे।

सोना फिर चढ़ा

वहीं दूसरी ओर सोना आज चमक उठा। 10 ग्राम 24 कैरेट सोने की कीमत 1,333 रुपए बढ़कर 1,54,098 रुपए पर पहुंच गई। शुक्रवार को यही सोना 1,52,765 रुपए प्रति 10 ग्राम था।हालांकि, पिछले तीन कारोबारी सत्रों में सोना कुल 3,224 रुपए सस्ता हुआ है। यह उतार-चढ़ाव बताता है कि बाजार अभी स्थिर नहीं है और निवेशकों को सतर्क रहने की जरूरत है।

ऑल टाइम हाई से बड़ी गिरावट

29 जनवरी को सर्राफा बाजार ने रिकॉर्ड बनाया था। उस दिन सोना 1,76,121 रुपए प्रति 10 ग्राम और चांदी 3,85,933 रुपए प्रति किलो के ऑल टाइम हाई पर पहुंच गए थे।तब से अब तक सोना 22,023 रुपए और चांदी 1,44,986 रुपए सस्ती हो चुकी है। यह गिरावट उन निवेशकों के लिए चिंता का कारण है जिन्होंने ऊंचे दाम पर खरीदारी की थी, लेकिन नए खरीदारों के लिए यह मौका भी बन गई है।

शहरों में अलग-अलग क्यों होते हैं रेट

अक्सर लोग पूछते हैं कि अलग-अलग शहरों में सोने-चांदी के रेट अलग क्यों होते हैं। दरअसल, IBJA जो रेट जारी करता है उसमें 3 प्रतिशत जीएसटी, मेकिंग चार्ज और ज्वेलर्स का मार्जिन शामिल नहीं होता।इसी वजह से स्थानीय बाजार में कीमतें थोड़ी अलग दिखती हैं। यही रेट भारतीय रिजर्व बैंक सोवरेन गोल्ड बॉन्ड तय करने के लिए इस्तेमाल करता है। कई बैंक गोल्ड लोन के लिए भी इन्हीं आधार दरों का सहारा लेते हैं।

सस्ते दाम पर खरीदारी शुरू

पिछले कुछ दिनों में कीमतों में आई तेज गिरावट के बाद बाजार में हलचल बढ़ी है। निवेशक अब निचले स्तर पर खरीदारी करने लगे हैं।

ज्वेलर्स का कहना है कि ग्राहक पूछताछ बढ़ी है, खासकर शादी-ब्याह के सीजन को देखते हुए।हालांकि विशेषज्ञ सलाह दे रहे हैं कि एकमुश्त बड़ी रकम लगाने से बचना चाहिए। धीरे-धीरे निवेश करना ज्यादा सुरक्षित तरीका माना जा रहा है।

खरीदते समय रखें सावधानी

सोना खरीदते समय दो बातें बेहद जरूरी हैं। पहली, हमेशा ब्यूरो ऑफ इंडियन स्टैंडर्ड का हॉलमार्क लगा सर्टिफाइड गोल्ड ही खरीदें। हॉलमार्क से पता चलता है कि सोना कितने कैरेट का है।दूसरी, खरीदने से पहले उस दिन की कीमत अलग-अलग स्रोतों से जरूर जांच लें। 24 कैरेट, 22 कैरेट और 18 कैरेट के दाम अलग होते हैं, इसलिए भ्रम से बचना जरूरी है।

असली चांदी की पहचान

चांदी खरीदते समय भी सतर्कता जरूरी है। कुछ आसान तरीकों से असली-नकली की पहचान की जा सकती है।मैग्नेट टेस्ट में असली चांदी चुंबक से नहीं चिपकती।आइस टेस्ट में चांदी पर रखी बर्फ तेजी से पिघलती है।असली चांदी में गंध नहीं होती, जबकि नकली में कॉपर जैसी गंध आ सकती है।सफेद कपड़े से रगड़ने पर काला निशान आए तो चांदी असली मानी जाती है।सोना और चांदी सिर्फ धातु नहीं, भारतीय परिवारों की भावनाओं से जुड़े हैं। बेटी की शादी हो या भविष्य की सुरक्षा, इन धातुओं पर भरोसा पीढ़ियों से कायम है।लेकिन बाजार का नियम साफ है,कीमतें कभी स्थिर नहीं रहतीं। इसलिए समझदारी, धैर्य और सही जानकारी के साथ ही निवेश करना बेहतर है। फिलहाल बाजार एक बार फिर संकेत दे रहा है कि चमक के पीछे जोखिम भी छिपा होता है। जो समझदारी से कदम बढ़ाएगा, वही इस उतार-चढ़ाव में फायदा उठा पाएगा।

सद्गुरु कृपा से ही मिलता है ब्रह्मज्ञान

@ भारतश्री ब्यूरो

मैं पहले पाठ में विश्वास नहीं करता था क्योंकि मैं एक डाक्टर था। प्रारंभिक जीवन में मैंने बहुत आर्थिक तंगी देखी है। मैं नहीं मानता था कि पाठ से दुख, कष्ट और संकट समाप्त हो जाते हैं। एक बार एक सद्गुरु मिले। मैं और गुरु मां उनके आश्रम पर गए। वे बोले कि तुम बैठो मैं अभी आता हूं। इसके बाद हम तीन दिन तक उनकी प्रतीक्षा करते रहे लेकिन वे तीसरे दिन शाम को आए और आते ही कहा कि तुम अभी तक बैठे हो? मैंने उनसे निवेदन किया कि कृपा कर हमें पाठ दे दो। उन्होंने हम पर कृपा और मंत्र प्रदान किया। मैंने सोचा, इससे क्या होगा। मेरा संशय निवारण करने के लिए उन्होंने मुझे दुर्गा सप्तशती का संदर्भ पढ़ाया जो इस प्रकार है- हे माता अपर्णा ! तुम्हारे मंत्र का एक अक्षर भी कानों में पड़ जाए तो उसका फल यह होता है कि मूर्ख, चांडाल भी मधु पाक के समान मधु वाणी का उच्चारण करने वाला उत्तम वक्ता हो जाता है। दीन मनुष्य भी स्वर्ण मुद्राओं से संपन्न हो चिरकाल तक निर्भय विहार करता है। जब मंत्र के एक अक्षर के श्रवण का ऐसा फल है तो जो लोग विधिपूर्वक जप में लगे हैं उसका प्रभाव कैसा होगा? यह पढ़ने के बाद मैं सोचने लगा कि जाप ही तो करना है, करके देख लेते हैं।

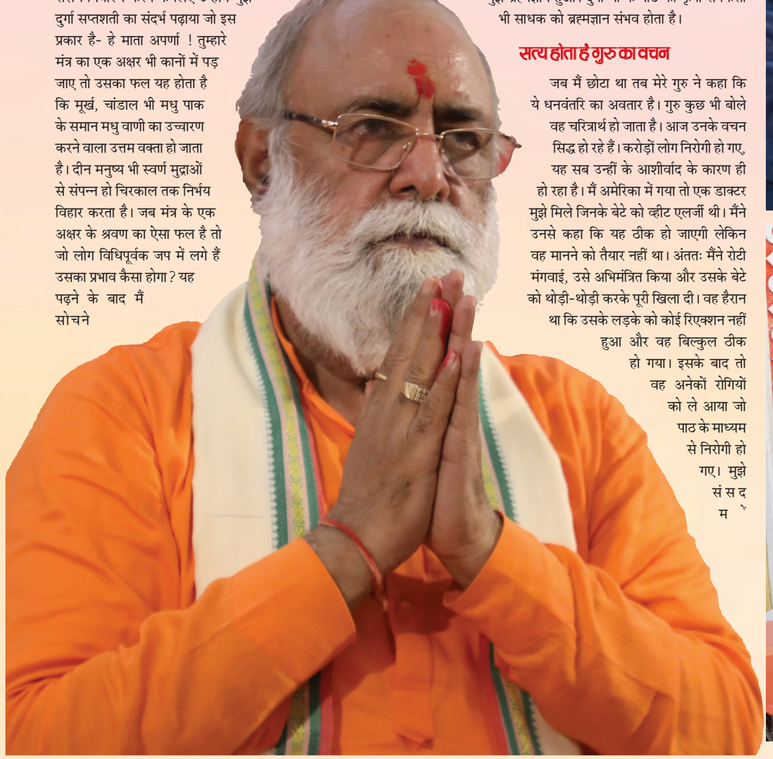

मैंने पाठ किया तो मेरे काम होने लगे। मेरे क्लीनिक पर लोग आने लगे और आय बढ़ गई। धीरे-धीरे मकान भी बन गया। मैंने सोचा इसे छोड़कर देख लो तो मैंने पाठ छोड़ दिया तो फिर व्यवधान आने लगे तो मैंने पुनः शुरू कर दिया। इसके बाद मेरी 160 क्लीनिक हो गई, उनमें डाक्टर भी रख लिए। अब मैंने सोचा कि क्यों न और लोगों को भी यह पाठ देना चाहिए। मैंने पहले अपने जानने वालों को दिया। जब उन्हें लाभ हुआ तब सार्वजनिक रूप से समागम के प्रारूप के माध्यम से अनंत लोगों को दिया। आज विश्व के 50 करोड़ से अधिक लोग इस पाठ से लाभान्वित हो गए हैं। मैंने सद्गुरु की कृपा से पाठ किया और मुझे ब्रह्मज्ञान हुआ। दुर्गा मां के पाठ की कृपा से किसी भी साधक को ब्रह्मज्ञान संभव होता है।

सत्य होता है गुरु का वचन

जब मैं छोटा था तब मेरे गुरु ने कहा कि ये धनवंतरि का अवतार है। गुरु कुछ भी बोले वह चरित्रार्थ हो जाता है। आज उनके वचन सिद्ध हो रहे हैं। करोड़ों लोग निरोगी हो गए, यह सब उन्हीं के आशीर्वाद के कारण ही हो रहा है। मैं अमेरिका में गया तो एक डाक्टर मुझे मिले जिनके बेटे को व्हीट एलर्जी थी। मैंने उनसे कहा कि यह ठीक हो जाएगी लेकिन वह मानने को तैयार नहीं था। अंततः मैंने रोटी मंगवाई, उसे अभिमंत्रित किया और उसके बेटे को थोड़ी-थोड़ी करके पूरी खिला दी। वह हैरान था कि उसके लड़के को कोई रिएक्शन नहीं हुआ और वह बिल्कुल ठीक हो गया। इसके बाद तो वह अनेकों रोगियों को ले आया जो पाठ के माध्यम से निरोगी हो गए। मुझे संसद में

बुलाया गया और सम्मानित किया गया। इसके बाद तो यह सिलसिला चलता ही रहा।

प्रभु की शरणागत हो करें प्रार्थना

हम क्या हैं, हमारा वास्तविक रूप क्या है, यह जानना जरूरी है। ऐसे-ऐसे रोग हैं-पागलपन, हिस्टीरिया जिनका कोई इलाज नहीं है, ये क्यों होते हैं। केवल मां दुर्गा ही इन रोगों का निवारण करती हैं। श्रीगुरुग्रंथ साहिब जी में वर्णन है-परमेश्वर नूं भूल्या व्यापन सब्बे रोग। जब हम परमेश्वर का नाम लेते हैं तो बीमारियां खत्म हो जाती हैं, असाध्य रोग चले जाते हैं। जब हम कहते हैं कि प्रभु तेरा भाणा मीठा लागै, आपकी कृपा और भक्ति प्राप्त हमें हो तो प्रभु कृपा प्राप्त होती है। अतः हमें प्रभु से प्रार्थना करनी चाहिए कि हम तेरी शरण में आए हैं, हमारे सब दुखों का अंत कर दो। हे परमात्मा, हे निरंकार, हे अकाल पुरख, वाहेगुरु, मां दुर्गा हमारा कल्याण करो।

समागम में भगवान श्री लक्ष्मी नारायण धाम के महामंत्री व मंच संचालक श्री सुशील वर्मा 'गुरुदास' जी ने कहा कि आज का यह अद्भुत समागम जो कुरुक्षेत्र में हो रहा है जहां भगवान श्रीकृष्ण और मां दुर्गा की महाकृपा का अद्भुत स्थान है। इतिहास के अद्भुत पृष्ठ का समापन इस समागम में हुआ है। 2002 में आज के दिन समागम प्रारंभ हुए थे, शुभारंभ हुआ था। शास्त्रोक्त दुख निवारण का आंदोलन आज के दिन से हुआ था। मां दुर्गा की कृपा से 776 सोपान अर्थात 776 सीढ़ियां प्रभु कृपा दुख निवारण समागम की तय की जा चुकी हैं। इतनी कृपाएं विश्व में हो रही हैं जो इसके साक्ष्य और प्रमाण हैं। वैज्ञानिक सत्य है कि हम तन, मन, धन के दुखों से मुक्त हो रहे हैं।

कौन है इस ब्रह्मांड का नियंता

आम आदमी के मस्तिष्क में यह विचार आता है कि चन्द्रमा, सूरज, पृथ्वी और तारों को बनाने वाला कौन है। यह किसी दैवीय शक्ति ने बनाए हैं या अपने आप ही बन गए हैं, इनका नियंता कौन है जिसने इन्हें पैदा किया है? इसके बाद दूसरा विचार आता है कि विश्व का सबसे पहला ग्रंथ कौन सा है जिससे यह पता लगे कि जब दुनिया नहीं थी तब कौन था और किसने इस दुनिया को पैदा किया है। किसने ब्रह्मा, विष्णु, महेश और देवताओं को पैदा किया है? मूल बात यह भी है कि उसने पृथ्वी, आकाश, वायु, जल, अग्नि, सूरज, चन्द्रमा, तारे व ग्रह नक्षत्र क्यों बनाए? इनका अधिष्ठाता कौन है और इस चराचर जगत का संचालन कौन करता है। यह ज्ञान कहां से मिलेगा? हम कहां से आते हैं और मरने के बाद कहां जाते हैं, यह किसको पता है? हमें इस तत्व का ज्ञान कौन देगा?

कौन देगा तत्व का ज्ञान

पूरे विश्व में लगभग 4200 धर्म हैं और सब धर्मों के धर्मग्रंथ भी हैं। इनमें से मुख्य इस्लाम धर्म के ग्रंथ कुरान-ए-पाक में वर्णन है कि 'अल्लाह हो अकबर'। अल्लाह ही नियंता है। बाईबल में वर्णन है-गॉड ही परमात्मा है। वेदों में वर्णन है-एको ब्रह्म द्वितीयो नास्ति। सब कहते हैं- 'एक खुदा है, एक परमात्मा है, एक गॉड है, एक ईश्वर है लेकिन फिर भी लड़ते क्यों हैं'। सूरज एक है लेकिन इसको आफताब, दिवाकर, प्रभाकर आदि अलग-अलग नामों से जाना जाता है और इन्हीं नामों को लेकर हम लड़ते हैं। हम पूजा-पाठ करते हैं, हवन-यज्ञ करते हैं, ग्रंथों को पढ़ते हैं लेकिन फिर भी तत्व का ज्ञान नहीं मिलता है। गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा कि किसी तत्ववेत्ता की शरण में जाकर दंडवत प्रणाम करो और उससे निवेदन करो तब वह तुम्हें तत्व का ज्ञान प्रदान करेगा। तत्व का ज्ञान भारत की धरती पर होने वाले सत्संग के अलावा कहीं भी नहीं मिलता।

मूर्तियों में नहीं मिलता भगवान

हम मूर्तियों की पूजा करते हैं लेकिन यह सब तो हमारे द्वारा ही बनाई गई हैं। क्या इनकी पूजा करने से हमारे रोग, समस्याएं और कष्ट खत्म हो सकते हैं? क्या इनका समाधान होगा? इतना कुछ करने के बाद भी क्या किसी ने आत्मा-परमात्मा, ईश्वर, खुदा, वाहेगुरु, अकाल पुरख, नारायण, ब्रह्मा, काली, महेश, लक्ष्मी, सरस्वती को देखा है? क्या इनसे किसी का सामना हुआ है? लाखों लोग मंदिरों, मस्जिदों और गुरुद्वारों में जाते हैं फिर भी बीमारियां क्यों आती हैं? असाध्य रोगों से लोग मर रहे हैं और एक दूसरे को मार रहे हैं। आगे आने वाले समय में भयंकर युद्ध होने वाला है जिसमें आदमी आदमी को खाएगा। हम विभिन्न भाषा भाषी हैं, ईश्वर, परमात्मा, गॉड, अल्लाह वस्तुतः एक ही है, यह हमें जानना चाहिए। हम परमात्मा से इसलिए मिलना चाहते हैं ताकि हमारे रोग, कष्ट, दुख और समस्याएं हटें।

कांग्रेस में भीतर की आवाज़ या भीतर का तूफ़ान? मणिशंकर अय्यर के बयान से गरमाई सियासत

@ आनंद मीणा

कभी कांग्रेस के तेजतर्रार और बेबाक नेता रहे मणिशंकर अय्यर एक बार फिर सुर्खियों में हैं। इस बार वजह सिर्फ उनका बयान नहीं, बल्कि उस बयान के पीछे छिपा राजनीतिक संकेत है। एक मीडिया बातचीत में अय्यर ने INDIA ब्लॉक, राहुल गांधी, एमके स्टालिन, शशि थरूर और पार्टी प्रवक्ताओं पर खुलकर अपनी राय रखी। उनके शब्दों ने कांग्रेस के भीतर चल रही खामोश खींचतान को जैसे सार्वजनिक मंच पर ला दिया।

"मैं गांधीवादी हूं, नेहरूवादी हूं, राजीववादी हूं लेकिन राहुलवादी नहीं"

अय्यर ने कहा कि INDIA ब्लॉक को मजबूत करना है तो तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एमके स्टालिन सबसे उपयुक्त व्यक्ति हैं। उनके मुताबिक राहुल गांधी प्रधानमंत्री बन सकते हैं, लेकिन गठबंधन को संभालने और एकजुट रखने के लिए कोई ऐसा नेता चाहिए जो पूरा समय उसी काम में लगाए। अय्यर की इस टिप्पणी को कांग्रेस के भीतर नेतृत्व शैली पर सवाल की तरह देखा जा रहा है।उन्होंने एक और चुभती बात कही कि राहुल गांधी भूल गए हैं कि मैं पार्टी का सदस्य हूं। इसलिए मैं गांधीवादी, नेहरूवादी और राजीववादी हूं, लेकिन राहुलवादी नहीं।" यह वाक्य सिर्फ व्यक्तिगत नाराजगी नहीं, बल्कि कांग्रेस की मौजूदा पीढ़ी और पुरानी पीढ़ी के बीच की दूरी का संकेत देता है।

शशि थरूर पर टिप्पणी, पवन खेड़ा को तोता कहा

अय्यर यहीं नहीं रुके। उन्होंने कांग्रेस सांसद शशि थरूर को एंटी-पाकिस्तान बताया और कहा कि वे भविष्य में विदेश मंत्री बनना चाहते हैं। यह बयान ऐसे समय में आया है जब कांग्रेस खुद अपनी विदेश नीति को लेकर भाजपा से अलग दृष्टिकोण पेश करने की कोशिश कर रही है।सबसे ज्यादा विवाद तब हुआ जब अय्यर ने कांग्रेस प्रवक्ता पवन खेड़ा को तोता कह दिया। उनका कहना था कि पवन खेड़ा वही दोहराते हैं जो जयराम रमेश उन्हें बताते हैं। इसके जवाब में पवन खेड़ा ने सोशल मीडिया पर लिखा कि अय्यर का पिछले कुछ वर्षों से कांग्रेस से कोई आधिकारिक संबंध नहीं है और वे अपनी व्यक्तिगत क्षमता में बोलते हैं।कांग्रेस महासचिव केसी वेणुगोपाल ने भी साफ किया कि अय्यर का बयान पार्टी का आधिकारिक रुख नहीं है। सचिन पायलट ने भी कहा कि अय्यर कांग्रेस में नहीं हैं, इससे ज्यादा वे कुछ नहीं कहना चाहते।

केरल को लेकर निराशा

अय्यर ने केरल विधानसभा चुनाव को लेकर भी निराशा जताई। उन्होंने कहा कि वे चाहते हैं कांग्रेस जीते, लेकिन उन्हें नहीं लगता कि पार्टी वहां जीत पाएगी। उनके मुताबिक कांग्रेस नेता आपस में बंटे हुए हैं और कम्युनिस्टों से ज्यादा एक-दूसरे से संघर्ष कर रहे हैं। यह बयान ऐसे समय में आया है जब कांग्रेस केरल में वापसी की उम्मीद कर रही है।गौरतलब है कि इससे पहले अय्यर केरल के मुख्यमंत्री पिनराई विजयन की तारीफ कर चुके हैं और वाम मोर्चे की वापसी की संभावना जताई थी।

पुराने बयान, नई बहस

मणिशंकर अय्यर विवादों से अछूते नहीं रहे हैं। 2018 में कराची यात्रा के दौरान उन्होंने कश्मीर मुद्दे पर पाकिस्तान की नीति की तारीफ की थी और कहा था कि वे पाकिस्तान से भी उतना ही प्यार करते हैं जितना भारत से। 2023 में उन्होंने कहा था कि पाकिस्तान के लोग भारत को दुश्मन नहीं मानते और संवाद बंद रहने से आम लोग प्रभावित होते हैं।2019 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर अपमानजनक टिप्पणी के बाद कांग्रेस ने उन्हें निलंबित कर दिया था। अगस्त 2023 में उन्होंने पूर्व प्रधानमंत्री पीवी नरसिम्हा राव को सांप्रदायिक बताते हुए नया विवाद खड़ा किया था।

क्या यह अंदरूनी असंतोष की आवाज है?

राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि अय्यर के बयान को केवल व्यक्तिगत राय मानकर नजरअंदाज करना आसान है, लेकिन यह कांग्रेस के भीतर मौजूद असंतोष की झलक भी हो सकती है। एक ओर पार्टी नए नेतृत्व और नई रणनीति की बात करती है, दूसरी ओर पुराने नेता खुद को उपेक्षित महसूस करते हैं।

अय्यर की भाषा भले ही तीखी रही हो, लेकिन उनके शब्दों में एक तरह की पीड़ा भी झलकती है ,एक ऐसे नेता की, जिसने दशकों तक पार्टी के लिए काम किया और अब खुद को हाशिए पर पाता है। यह सिर्फ राजनीतिक बयानबाजी नहीं, बल्कि उस पीढ़ी का मनोविज्ञान भी है जो बदलाव के दौर में खुद को असहज महसूस करती है। INDIA ब्लॉक 2024 के बाद नई रणनीति बनाने में जुटा है। विपक्षी एकता की बात बार-बार दोहराई जा रही है। ऐसे में अय्यर का बयान विपक्षी खेमे के भीतर तालमेल की चुनौती को उजागर करता है। क्या एमके स्टालिन जैसी क्षेत्रीय ताकतें गठबंधन को नई दिशा देंगी? क्या राहुल गांधी राष्ट्रीय स्तर पर चेहरा बने रहेंगे? या फिर विपक्ष को नई संरचना की जरूरत पड़ेगी?

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम
भारत श्री

केंद्र की मांग: केरल से धान बोनस बंद करने की सलाह,

घटती पैदावार बना रही मुश्किल

हाल ही में केंद्र सरकार ने केरल राज्य को एक पत्र भेजा है, जिसमें धान की खरीद पर मिलने वाले अतिरिक्त बोनस को बंद करने की सलाह दी गई है। यह बोनस न्यूनतम समर्थन मूल्य यानी एमएसपी से ऊपर दिया जाता है। केंद्र का कहना है कि इस बोनस की वजह से धान का उत्पादन जरूरत से ज्यादा हो रहा है, जिससे अनाज का भंडारण बढ़ रहा है और सरकारी खजाने पर बोझ पड़ रहा है। केरल में धान की पैदावार पहले से ही कम हो रही है, और राज्य सरकार इस बोनस से किसानों को प्रोत्साहन देती है। राज्य में धान चावल का मुख्य भोजन है, और लोग इसे बहुत पसंद करते हैं। लेकिन पिछले कुछ दशकों में धान की खेती का क्षेत्रफल घट गया है, जिसकी वजह से उत्पादन भी कम हुआ है। आंकड़ों के अनुसार, 1970 के दशक में केरल में धान की खेती करीब 8 लाख हेक्टेयर में होती थी, जो अब घटकर 2 लाख हेक्टेयर के आसपास रह गई है। उत्पादन भी 13 लाख टन से घटकर 5-6 लाख टन सालाना हो गया है। इसका मुख्य कारण शहरीकरण, जमीन का दूसरे कामों में इस्तेमाल, पानी की कमी और किसानों की आर्थिक मुश्किलें हैं। केंद्र की यह सलाह ऐसे समय आई है जब केरल किसानों को सहारा देने की कोशिश कर रहा है। राज्य सरकार धान की खरीद पर एमएसपी के अलावा 6.31 रुपये प्रति किलो का बोनस देती है, जबकि केंद्र का एमएसपी 23.69 रुपये प्रति किलो है। इस बोनस से किसानों की आमदनी बढ़ती है और वे खेती जारी रखते हैं। लेकिन केंद्र का मानना है कि यह बोनस अतिरिक्त उत्पादन को बढ़ावा देता है, जो राष्ट्रीय स्तर पर समस्या पैदा कर रहा है। इस मुद्दे पर केरल में राजनीतिक पार्टियां एकजुट हो गई हैं। यहां तक कि बीजेपी की राज्य इकाई ने भी केंद्र से अपील की है कि केरल को इस नियम से छूट दी जाए, क्योंकि यहां उत्पादन घट रहा है, न कि बढ़ रहा। यह विवाद केंद्र-राज्य संबंधों पर भी सवाल उठा रहा है, जहां केंद्र एक समान नीति लागू करना चाहता है, लेकिन राज्य अपनी स्थानीय जरूरतों के हिसाब से फैसले लेना चाहते हैं। किसान संगठन इस सलाह का विरोध कर रहे हैं, क्योंकि इससे उनकी कमाई कम हो सकती है और धान की खेती और कम हो सकती है। कुल मिलाकर, यह मुद्दा केरल की खाद्य सुरक्षा और किसानों की आजीविका से जुड़ा है, जो विचार करने लायक है।

केंद्र सरकार का पक्ष

केंद्र सरकार के वित्त मंत्रालय के व्यय विभाग ने केरल के मुख्य सचिव को पत्र लिखकर कहा है कि धान पर राज्य स्तर का बोनस बंद किया जाए। उनका तर्क है कि यह बोनस एमएसपी से ऊपर है, जिससे धान का उत्पादन जरूरत से ज्यादा हो जाता है। इससे अनाज का अतिरिक्त स्टॉक बनता है, जो भंडारण की समस्या पैदा करता है और सरकारी सब्सिडी पर दबाव बढ़ाता है। केंद्र का कहना है कि कुछ राज्य जैसे पंजाब और हरियाणा में यह बोनस अतिरिक्त उत्पादन को प्रोत्साहित करता है, जिससे भूजल स्तर गिर रहा है और पर्यावरण को नुकसान हो रहा है। लेकिन केरल के मामले में केंद्र ने यह नहीं माना कि यहां उत्पादन घट रहा है। पत्र में लिखा है कि बोनस से पैदावार बढ़ती है, जो राष्ट्रीय स्तर पर बोझ बनती है। केंद्र एक देश, एक एमएसपी की नीति पर जोर दे रहा है, ताकि सभी राज्यों में समान नियम लागू हों। इससे सरकारी खर्च नियंत्रित रहेगा और अनाज का प्रबंधन बेहतर होगा। हाल के वर्षों में भारत में धान का उत्पादन रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच गया है, जो 100 मिलियन टन से ज्यादा है। इससे निर्यात बढ़ा है, लेकिन घरेलू स्टॉक भी बहुत ज्यादा हो गया है। केंद्र का मानना है कि राज्य बोनस इस असंतुलन को बढ़ाते हैं। केरल में हालांकि उत्पादन कम है, लेकिन केंद्र की सलाह सभी राज्यों के लिए सामान्य है। कुछ विशेषज्ञों का कहना है कि यह कदम वित्तीय अनुशासन बनाए रखने के लिए जरूरी है, क्योंकि राज्य सरकारें बोनस देकर अपना बजट बिगाड़ रही हैं। लेकिन कहते हैं कि यह संघीय ढांचे पर हमला है, जहां राज्य अपनी कृषि नीतियां खुद बना सकते हैं। केंद्र ने यह भी कहा है कि बोनस से किसानों को फायदा तो होता है, लेकिन लंबे समय में यह टिकाऊ नहीं है। वे चाहते हैं कि राज्य अन्य तरीकों से किसानों की मदद करें, जैसे बेहतर सिंचाई या बीज उपलब्ध कराना। इस मुद्दे पर केंद्र ने कोई सख्त कार्रवाई की धमकी नहीं दी, लेकिन सलाह दी है कि बोनस की समीक्षा की जाए। कुल मिलाकर, केंद्र का फोकस राष्ट्रीय हित पर है, जहां अतिरिक्त उत्पादन को नियंत्रित करना जरूरी है। लेकिन केरल जैसे राज्यों की स्थानीय समस्याओं को नजरअंदाज करने का आरोप लग रहा है। यह बहस कृषि नीति के भविष्य पर विचार करने का मौका दे रही है।

विवाद की शुरुआत

केरल सरकार की प्रतिक्रिया

केरल के मुख्यमंत्री पिनराई विजयन ने केंद्र की सलाह को अजीब बताया है और कहा है कि बढ़ती पैदावार को बोझ मानना किसानों के खिलाफ चुनौती है। उन्होंने कहा कि राज्य धान किसानों को एमएसपी के ऊपर 6.31 रुपये प्रति किलो का बोनस देता है, जो उनकी मदद करता है। मुख्यमंत्री ने केंद्र पर आरोप लगाया कि कॉरपोरेट कंपनियों के हजारों करोड़ के कर्ज माफ किए जाते हैं, लेकिन किसानों के छोटे बोनस को बोझ बताया जा रहा है। यह दोहरा मापदंड है। विजयन ने कहा कि केंद्र की सलाह न सिर्फ किसानों के खिलाफ है, बल्कि केरल राज्य के खिलाफ भी है।

राज्य सरकार इस बोनस को जारी रखेगी, क्योंकि इससे धान की खेती बची हुई है। केरल में धान मुख्य फसल है और राज्य की खाद्य सुरक्षा इससे जुड़ी है। एलडीएफ कन्वेनर टीपी रामकृष्णन ने भी केंद्र से सलाह वापस लेने की मांग की है। उनका कहना है कि यह कदम खाद्य आत्मनिर्भरता को कमजोर करेगा। राज्य के कृषि मंत्री पी प्रसाद ने कहा कि बोनस बंद करने से किसानों का विश्वास टूटेगा और पैदावार और कम हो जाएगी। केरल में पहले से ही धान की खेती घट रही है, और बोनस से थोड़ा सुधार हुआ है। राज्य सरकार ने केंद्र से अपील की है कि इस फैसले पर दोबारा विचार करे। यह मुद्दा केंद्र-राज्य संबंधों को प्रभावित कर रहा है, जहां राज्य अपनी कृषि नीतियों पर स्वतंत्रता चाहता है। विशेषज्ञों का कहना है कि केरल की स्थिति अलग है, क्योंकि यहां छोटे खेत हैं और पैदावार घट रही है, न कि बढ़ रही। राज्य में किसान संगठन विरोध प्रदर्शन कर रहे हैं और कह रहे हैं कि बोनस बंद हुआ तो वे खेती छोड़ देंगे। कुल मिलाकर, केरल सरकार का रुख साफ है कि वे किसानों के साथ खड़ी है और केंद्र की सलाह नहीं मानेगी। यह बहस संघीय ढांचे पर सवाल उठा रही है और सोचने पर मजबूर कर रही है कि क्या एक समान नीति सभी राज्यों के लिए सही है।

बीजेपी का रुख और छूट की मांग

केरल बीजेपी इकाई ने भी केंद्र से अपील की है कि राज्य को धान बोनस बंद करने के नियम से छूट दी जाए। राज्य बीजेपी अध्यक्ष राजीव चंद्रशेखर ने वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण को पत्र लिखकर कहा है कि केरल की स्थिति अलग है। यहां धान की पैदावार घट रही है, न कि बढ़ रही। राज्य में छोटे खेत हैं, मौसम की दिक्कतें हैं और पैदावार मुख्य रूप से खाद्य सुरक्षा के लिए है, न कि अतिरिक्त उत्पादन के लिए। उन्होंने कहा कि केंद्र की सलाह अतिरिक्त स्टॉक और भूजल की समस्या को देखते हुए सही है, लेकिन यह केरल पर लागू नहीं होती। केरल में धान का क्षेत्रफल और उत्पादन दशकों से कम हो रहा है, और राज्य केंद्र के अतिरिक्त स्टॉक में योगदान नहीं देता। चंद्रशेखर ने कहा कि बोनस बंद करने से किसानों की आर्थिक मुश्किलें बढ़ेंगी और पैदावार और कम हो जाएगी। यह बात दिलचस्प है कि केरल में सत्ताधारी सीपीएम और विपक्षी बीजेपी इस मुद्दे पर एक साथ हैं। दोनों पार्टियां केंद्र की सलाह का विरोध कर रही हैं। बीजेपी नेता ने कहा कि राज्य सरकार ने एमएसपी से ऊपर बोनस नहीं बढ़ाया है, बल्कि किसानों की मदद के लिए रखा है। उन्होंने केंद्र से अनुरोध किया कि केरल की खास कृषि और खाद्य जरूरतों को ध्यान में रखकर छूट दी जाए। यह रुख दिखाता है कि स्थानीय मुद्दों पर राजनीतिक दल एकजुट हो सकते हैं। विशेषज्ञों का कहना है कि यह केंद्र की नीति में लचीलापन की जरूरत बताता है। केरल में किसान पहले से ही महंगाई, मौसम की मार और कम आमदनी से जूझ रहे हैं। बोनस उनके लिए बड़ा सहारा है। अगर छूट मिली तो राज्य की कृषि बचेगी, वरना मुश्किलें बढ़ेंगी। कुल मिलाकर, बीजेपी की यह अपील बहस को संतुलित बनाती है और सोचने पर मजबूर करती है कि क्या सभी राज्यों के लिए एक नियम सही है।

किसानों पर असर और आगे की चुनौतियां

अगर धान बोनस बंद हुआ तो केरल के किसानों की आमदनी में कम से कम 6.31 रुपये प्रति किलो की कमी आएगी, जो उनकी आजीविका पर बड़ा असर डालेगा। राज्य में ज्यादातर किसान छोटे हैं, जिनके पास 1-2 हेक्टेयर जमीन है। वे पहले से ही लागत बढ़ने और कम दाम मिलने से परेशान हैं। बोनस बंद होने से कई किसान धान की खेती छोड़ सकते हैं, जिससे पैदावार और कम हो जाएगी। केरल पहले से ही धान आयात पर निर्भर है, और अगर उत्पादन घटा तो खाद्य सुरक्षा खतरे में पड़ सकती है। राज्य में धान की घटती पैदावार की वजहें कई हैं- शहरीकरण से जमीन कम होना, पानी की कमी, मजदूरी की ऊंची दर और फसल बीमारियां। सरकार ने हाल के वर्षों में बोनस बढ़ाकर और अन्य योजनाओं से पैदावार को थोड़ा बढ़ाया है, लेकिन अभी भी 1970 के स्तर से बहुत कम है। किसान संगठन कहते हैं कि केंद्र की सलाह किसान विरोधी है और इससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था प्रभावित होगी। लेकिन कुछ विशेषज्ञ केंद्र के पक्ष में कहते हैं कि बोनस की बजाय टिकाऊ तरीके अपनाने चाहिए, जैसे जैविक खेती या पानी बचाने की तकनीक। यह मुद्दा केंद्र-राज्य संबंधों पर भी असर डाल रहा है, जहां राज्य अपनी स्वायत्तता बचाना चाहते हैं। आगे चलकर, अगर केंद्र सख्त हुआ तो केरल अदालत जा सकता है या राजनीतिक विरोध बढ़ा सकता है। लेकिन बातचीत से समाधान निकल सकता है, जहां केरल की खास स्थिति को माना जाए। कुल मिलाकर, यह मामला हमें सोचने पर मजबूर करता है कि कृषि नीतियां कैसे बनें जो सभी की जरूरतें पूरी करें। किसानों की आवाज सुनना जरूरी है, ताकि देश की खाद्य सुरक्षा मजबूत रहे।

सोना-चांदी के दामों में बड़ा धक्का

चांदी 1.75 लाख सस्ती, सोना 37 हजार टूटा, आगे क्या होगा?

सोना और चांदी के दामों में हाल के दिनों में भारी गिरावट आई है, जो बाजार में हलचल मचा रही है। चांदी का भाव अपने ऊंचे स्तर से 1.75 लाख रुपये प्रति किलोग्राम सस्ता हो गया है, जबकि सोना 37 हजार रुपये प्रति 10 ग्राम टूट चुका है। जनवरी 2026 में चांदी का दाम 4 लाख रुपये प्रति किलोग्राम से ऊपर पहुंच गया था, लेकिन अब यह 2.80 लाख रुपये के आसपास घूम रहा है। इसी तरह सोना 1.95 लाख रुपये के ऊंचे स्तर से गिरकर अब 1.58 लाख रुपये प्रति 10 ग्राम पर आ गया है। यह गिरावट अमेरिका की मजबूत अर्थव्यवस्था के आंकड़ों से शुरू हुई, जहां नौकरियों में बढ़ोतरी और बेरोजगारी दर में कमी ने फेडरल रिजर्व के ब्याज दरों में कटौती की उम्मीदों को कम कर दिया। मजबूत डॉलर ने सोना-चांदी जैसी कमोडिटी को महंगा बना दिया, जिससे निवेशक मुनाफा वसूलने लगे। भारत में एमसीएक्स पर सोना 1,58,000 रुपये और चांदी 2,80,000 रुपये के स्तर पर कारोबार कर रही है। यह बदलाव आम लोगों के लिए सोना-चांदी खरीदने का मौका दे सकता है, लेकिन बाजार की अस्थिरता से सतर्क रहना जरूरी है। वैश्विक स्तर पर सोना 4,981 डॉलर प्रति औंस और चांदी 76.53 डॉलर प्रति औंस पर है, जो हाल की ऊंचाई से काफी नीचे है। यह स्थिति वैश्विक अनिश्चितताओं जैसे व्यापार युद्ध और मुद्रास्फीति से प्रभावित है, लेकिन औद्योगिक मांग चांदी को कुछ सहारा दे रही है। कुल मिलाकर, यह गिरावट बाजार की सामान्य प्रक्रिया का हिस्सा लगती है, जहां ऊंचे दामों के बाद सुधार आता है। निवेशकों को लंबी अवधि में सोचकर फैसला लेना चाहिए, क्योंकि छोटी अवधि में उतार-चढ़ाव जारी रह सकता है। क्या यह गिरावट स्थायी है या अस्थायी, यह आने वाले दिनों में स्पष्ट होगा।

गिरावट की शुरुआत और मौजूदा हालात

गिरावट के मुख्य कारण

इस गिरावट के पीछे कई वजहें हैं, जो वैश्विक और घरेलू बाजार से जुड़ी हैं। सबसे बड़ा कारण अमेरिका का मजबूत रोजगार डेटा है, जहां जनवरी में 1,30,000 नई नौकरियां जुड़ीं और बेरोजगारी दर 4.3 प्रतिशत पर आ गई। इससे फेडरल रिजर्व की ब्याज दरों में जल्दी कटौती की संभावना कम हो गई, जिससे डॉलर इंडेक्स 97 पर मजबूत हुआ। मजबूत डॉलर सोना-चांदी को दूसरे देशों के लिए महंगा बनाता है, इसलिए बिकवाली बढ़ गई। 2025 में चांदी के दाम 147 प्रतिशत बढ़े थे, जो औद्योगिक मांग और निवेशकों की रुचि से हुआ, लेकिन अब मुनाफा वसूलने का दौर है। भारत में बजट दिवस पर भी दाम गिरे, क्योंकि सरकारी घोषणाओं और मुद्रास्फीति की चिंताओं ने बाजार को प्रभावित किया। वैश्विक व्यापार युद्ध, जैसे अमेरिका-चीन और अमेरिका-भारत के टैरिफ विवाद, ने सप्लाई चेन को प्रभावित किया, लेकिन ऊंचे दामों से मांग कम हुई। चांदी की औद्योगिक इस्तेमाल, जैसे सोलर पैनल और इलेक्ट्रॉनिक्स में, अभी भी मजबूत है, लेकिन ऊंचे दामों से भारत जैसे देशों में सिल्वरवेयर की मांग घटी। सोने की बात करें तो भू-राजनीतिक तनाव कम होने से सुरक्षित निवेश की अपील कम हुई। कुल मिलाकर, यह गिरावट बाजार की ओवरबाय स्थिति से आई, जहां 2025 की रैली के बाद सुधार जरूरी था। विशेषज्ञों का कहना है कि यह स्वस्थ सुधार है, जो नए खरीदारों को मौका देता है, लेकिन अगर अमेरिकी डेटा और मजबूत आया तो गिरावट जारी रह सकती है। क्या भविष्य में दरें कम होंगी, यह बड़ा सवाल है जो दामों को प्रभावित करेगा।

बाजार और अर्थव्यवस्था पर प्रभाव

यह गिरावट बाजार और अर्थव्यवस्था पर कई तरीकों से असर डाल रही है। आम लोगों के लिए सोना-चांदी खरीदना अब सस्ता हो गया है, खासकर शादी-ब्याह के मौसम में, जहां दाम ऊंचे होने से मांग रुक गई थी। लेकिन निवेशकों में चिंता है, क्योंकि जिन्होंने ऊंचे दामों पर खरीदा, उन्हें नुकसान हो रहा है। गोल्ड और सिल्वर ईटीएफ में 2026 में 33,500 करोड़ रुपये का निवेश आया, लेकिन गिरावट से कुछ निकासी हो सकती है। भारत की अर्थव्यवस्था पर असर यह है कि आयात बिल कम हो सकता है, क्योंकि 2025 में सोना-चांदी आयात 68 अरब डॉलर का था, जो व्यापार घाटे को बढ़ा रहा था। अगर दाम कम रहेंगे तो आयात घटेगा, जो रुपये को मजबूत कर सकता है। लेकिन ज्वेलरी उद्योग में मांग बढ़ सकती है, क्योंकि कम दामों से बिक्री सुधरेगी। वैश्विक स्तर पर, यह गिरावट स्टॉक मार्केट को प्रभावित कर रही है, जहां निवेशक सोना-चांदी से पैसे निकालकर शेयरों में लगा रहे हैं। चांदी की औद्योगिक मांग मजबूत रहने से सोलर और इलेक्ट्रिक वाहन सेक्टर को फायदा हो सकता है, लेकिन ऊंचे दामों से पहले ही उत्पादन लागत बढ़ी थी। कुल मिलाकर, यह स्थिति संतुलित दृष्टिकोण की मांग करती है, जहां गिरावट से कुछ सेक्टरों को राहत मिलेगी, लेकिन लंबे समय में स्थिरता जरूरी है। क्या यह अर्थव्यवस्था के लिए अच्छा संकेत है या चुनौती, यह समय बताएगा। निवेशकों को विविधता बनाए रखनी चाहिए, ताकि एक संपत्ति की गिरावट से पूरा पोर्टफोलियो प्रभावित न हो।

भविष्य की संभावनाएं

भविष्य में सोना-चांदी के दाम क्या रहेंगे, यह कई कारकों पर निर्भर है। विशेषज्ञों का अनुमान है कि चांदी 2026 के अंत तक 2.4 लाख से 3.5 लाख रुपये प्रति किलोग्राम के बीच रह सकती है, जबकि सोना 1.75 लाख रुपये प्रति 10 ग्राम तक पहुंच सकता है। जेपी मॉर्गन का कहना है कि चांदी का औसत दाम 81 डॉलर प्रति औंस रहेगा, जो मौजूदा 76 डॉलर से ऊपर है। अगर फेडरल रिजर्व ब्याज दरें कम करता है तो दाम बढ़ सकते हैं, लेकिन मजबूत अमेरिकी अर्थव्यवस्था से दबाव रहेगा। भारत में मुद्रास्फीति और रुपये की स्थिति महत्वपूर्ण होगी, क्योंकि कमजोर रुपये से दाम ऊंचे रहेंगे। चांदी की औद्योगिक मांग, जैसे चीन और भारत में, सहारा देगी, लेकिन ऊंचे दामों से मांग कम हो सकती है। सोने के लिए भू-राजनीतिक अनिश्चितताएं, जैसे व्यापार युद्ध, सुरक्षित निवेश की अपील बढ़ा सकती हैं। कुछ विशेषज्ञ 50 प्रतिशत और गिरावट की बात कर रहे हैं, लेकिन ज्यादातर इसे अतिरंजित मानते हैं। लंबी अवधि में सोना-चांदी अच्छा निवेश रहेंगे, क्योंकि 2025 में 75 प्रतिशत और 167 प्रतिशत रिटर्न दिए थे। लेकिन छोटी अवधि में अस्थिरता रहेगी। क्या दाम फिर ऊंचाई छूएंगे, यह वैश्विक घटनाओं पर निर्भर है। निवेशकों को सतर्क रहकर बाजार देखना चाहिए।

निवेशकों के लिए उपयोगी सलाह

निवेशकों को इस स्थिति में सावधानी बरतनी चाहिए। अगर आप सोना-चांदी खरीदना चाहते हैं तो गिरावट का फायदा उठाएं, लेकिन पूरा पैसा एक बार में न लगाएं। विशेषज्ञ सलाह देते हैं कि 'बाय ऑन डिप' रणनीति अपनाएं, यानी गिरावट में खरीदें। लेकिन बाजार की अस्थिरता से बचने के लिए पोर्टफोलियो में 10-15 प्रतिशत तक ही सोना-चांदी रखें। ईटीएफ या सॉवरेन गोल्ड बॉन्ड जैसे विकल्प सुरक्षित हैं, क्योंकि भौतिक सोना रखने में जोखिम है। चांदी में निवेश करते समय औद्योगिक मांग पर नजर रखें, जो भविष्य में बढ़ सकती है। अगर आप बेचना चाहते हैं तो ऊंचे दामों का इंतजार करें, लेकिन मुनाफा वसूलने से न डरें। बाजार विशेषज्ञों का कहना है कि लंबी अवधि में सोना-चांदी मुद्रास्फीति से बचाव देते हैं, लेकिन छोटी अवधि में जोखिम है। रुपये की कमजोरी और वैश्विक घटनाओं पर ध्यान दें। कुल मिलाकर, संतुलित दृष्टिकोण अपनाएं और विशेषज्ञ सलाह लें। क्या यह निवेश का सही समय है, यह आपकी जोखिम क्षमता पर निर्भर करता है।

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम
भारत श्री

ज़िंदगी का सफ़र है ये कैसा सफ़र

याद करो
वो बचपन

चशमुल्ली, भोंदू, डरपोक...
याद करो

वो सुबह और वो रात
जब झड़े बालों वाले, मरियल बीमार कुत्ते सरीखा

बार-बार दुत्कारा उन्होंने तुम्हें अपनी ज़िंदगी की चौखट से
याद करो

वो दिन
जब आत्महत्या के मुहाने पर खड़े तुम

अपने फेफड़ों में जमे दुःख के बर्फ़ को
पिघलाने के लिए फूँक रहे थे सस्ती सिगरेट

याद करो
वो सच

जो एक उदास-जुआरी ने बताया था तुम्हें
कि जिसके दिल में गहराई होती है

इस धरती पर बेहद उदासी ही उसका नसीब है
याद करो

वो झूठ
जो किसी के आहत भर से चटक गया था

कि इस ग्रह की माटी में नहीं खिलता स्नेह का फूल
याद करो

वो पल
पहली बार हुआ था एहसास तुम्हें

कि ख़ुसरो दरिया प्रेम का, उल्टी वा की धार...
...और जो कुछ भी कर सकते हो याद, करो।

परंतु अंत में करना याद
वो उम्मीद

कि एक सुबह तुम सोकर उठोगे
और उसका चेहरा होगा सामने तुम्हारे

जिसने तुम्हारे किराया ना भरने पर भी
नहीं कराया ख़ाली तुमसे अपने दिल का कमरा

कि मेरे दोस्त!
ज़िंदगी की गाड़ी

उम्मीद के डीज़ल से चलती है।

एक और तारे के टूटने के बाद

जिसकी नंग-धड़ंग नाख़ूनों के ख़रोचों से सजाई गई लाश
भोरे-भोर तुम्हें भुतही बसवाड़ी के पास मिली है,

जिसका भाई उठा है आज
डूबते चाँद को अपने लहू से रंग देने की क़सम खाते हुए,

जिसकी माँ दुआरे लगी तुलसी को कोसते हुए
बदहवास भागी है घटनास्थल की तरफ़

वो लड़की मेरी बहन थी, दोस्त थी, माँ थी, प्रेमिका थी
परंतु अब इंसानियत के क्रीम, पाउडर पुते चेहरे पर

महज़ एक काला प्रश्नचिन्ह है।
कहते हैं कि एक रात वो दा विंसी के सपने में आई थी

और ठीक अगले ही दिन
उसने मोनालिसा पेंट करना शुरू किया था।

गेहूँ की सुनहरी बालियों ने बताया मुझे
कि जब गुज़रती थी नंगे पाँव खेतों की मेड़ से वो

तब सरसों के फूल शरारत से उसके बालों में अटक जाया करते थें,
नदी ने बताया कि गुदगुदी होती थी उसे

जब कभी वो भिगोती थी पाँव अपना।
वो जब गुनगुनाती थी तो बेसुध हो जाती थी

आम की फुनगी पर गाती कोयल,
उसकी खिलखिलाहट सुनकर ये दुनिया जवान हुआ करती थी।

परंतु अब...जब नहीं है वो
बहुत मुमकिन है कि दा विंसी अब भी करे चित्रकारी

पर मोनालिसा के होंठ अब भूल चुके होंगे मुस्कुराना,
सरसों फिर सजाएँगे अपने सिर पीला मुकुट

पर अब वो जेंटलमैन की तरह पेश आएँगे सबसे,
नदियाँ खो देंगी हँसते-हँसते ख़ुद में सिमट जाने की अदा,

आम की फुनगी पर गाती कोयल
अपने बेसुध होने का इंतिज़ार करेगी,

दुनिया सुस्ताते हुए चलेगी हाथ में लिए लाठी अब
अब...जब नहीं है वो!

आसित आदित्य
नई पीढ़ी के कवि-लेखक और अनुवादक।

तमिलनाडु की शैव भक्ति: बौद्ध-जैन प्रभाव से मुक्ति की कहानी

आंदोलन की शुरुआत और पृष्ठभूमि

तमिलनाडु में शैव भक्ति आंदोलन की शुरुआत छठी से आठवीं शताब्दी के बीच हुई, जब यह क्षेत्र बौद्ध और जैन धर्मों के प्रभाव में था। उस समय, 5वीं से 8वीं शताब्दी तक बौद्ध और जैन धर्म तमिल लोगों के बीच फैल चुके थे, और वे राजाओं का समर्थन पा रहे थे। लेकिन शैव भक्ति ने एक नई दिशा दी, जहां लोग शिव को अपना निजी भगवान मानकर भक्ति करने लगे। यह आंदोलन नयनार नाम के 63 संतों से जुड़ा था, जो अलग-अलग जातियों और पेशों से थे, जैसे किसान, व्यापारी और ब्राह्मण। उन्होंने तमिल भाषा में भजन गाए, जो लोगों के दिल को छूते थे। ये भजन तेवारम नाम की किताब में संकलित हैं, जो शिव की स्तुति करते हैं। राजाओं ने भी इस आंदोलन को समर्थन दिया, जैसे पल्लव राजा महेंद्रवर्मन प्रथम ने जैन धर्म छोड़कर शैव अपनाया। यह आंदोलन वैदिक परंपराओं को नए रूप में लाया, जहां भक्ति का रास्ता सभी के लिए खुला था, चाहे कोई भी जाति या लिंग हो। बौद्ध और जैन की कठोर साधना के मुकाबले, शैव भक्ति ने भावनात्मक लगाव पर जोर दिया। इससे हिंदू धर्म में नई जान आई, और तमिल संस्कृति में मंदिरों और उत्सवों का महत्व बढ़ा। यह आंदोलन सिर्फ धार्मिक नहीं था, बल्कि सामाजिक बदलाव भी लाया, जहां लोग जाति की दीवारों को तोड़कर एक साथ भक्ति करते थे। इतिहासकार कहते हैं कि यह वैदिक परंपराओं का पुनरुद्धार था, जो पुरानी किताबों जैसे श्वेताश्वतर उपनिषद से प्रेरित था। कुल मिलाकर, यह आंदोलन तमिल लोगों को बौद्ध-जैन के प्रभाव से बाहर निकालने में कामयाब रहा, और शिव भक्ति को घर-घर पहुंचाया।

प्रमुख संतों की भूमिका

शैव भक्ति आंदोलन में नयनार संतों की भूमिका सबसे अहम थी, जिन्होंने अपनी कविताओं और भजनों से लोगों को शिव भक्ति की ओर खींचा। इन 63 संतों में संबंदर, अप्पर, सुंदरर और मणिक्कवाचकर जैसे नाम प्रमुख हैं। संबंदर एक बच्चे की उम्र में ही संत बन गए और उन्होंने हजारों भजन लिखे, जो जैन और बौद्ध विचारों का विरोध करते थे। अप्पर पहले जैन थे, लेकिन बाद में शैव बने और उन्होंने पल्लव राजा को भी शैव धर्म अपनाने के लिए प्रेरित किया। सुंदरर ने नयनारों की सूची बनाई और अपने भजनों में शिव की महिमा गाई। मणिक्कवाचकर के भजन तिरुवाचकम में हैं, जो भावुक भक्ति से भरे हैं। ये संत जगह-जगह घूमते थे, मंदिरों में गाते थे और लोगों को शिव की पूजा सिखाते थे। उनके भजन तमिल भाषा में थे, जो आम लोगों की समझ में आते थे। 10वीं शताब्दी में नंबियंदर नंबी ने इनके भजनों को तिरुमुरई नाम की 12 किताबों में संकलित किया, जो चोल राजा राजराजा प्रथम के समय हुआ। ये किताबें शैव धर्म की मुख्य किताबें बनीं। संतों ने जाति भेद को नकारा और कहा कि भक्ति सबके लिए है। उन्होंने जीवन को उत्सव की तरह मनाया, जहां त्योहार और सामूहिक गान महत्वपूर्ण थे। यह आंदोलन वैष्णव अलवार संतों के साथ मिलकर चला, लेकिन शैव हिस्सा ज्यादा मजबूत था। संतों की कहानियां पेरिया पुराणम में हैं, जो 12वीं शताब्दी में सेक्किझार ने लिखी। इन संतों ने न सिर्फ धार्मिक, बल्कि साहित्यिक योगदान दिया, जो तमिल कविता को नई ऊंचाई दी। कुल मिलाकर, ये संत आंदोलन के आधार स्तंभ थे, जिन्होंने सरल भक्ति से लाखों लोगों को जोड़ा।

बौद्ध और जैन प्रभाव पर चुनौती

शैव भक्ति आंदोलन ने तमिलनाडु में बौद्ध और जैन धर्मों के प्रभाव को सीधे चुनौती दी, जो उस समय मजबूत थे। 5वीं से 8वीं शताब्दी तक ये धर्म राजाओं के संरक्षण में फैल चुके थे, और वे कठोर साधना और दुनिया से अलग होने पर जोर देते थे। लेकिन नयनार संतों ने शिव भक्ति को सरल और भावुक बनाकर लोगों को आकर्षित किया। संबंदर जैसे संतों ने जैन और बौद्धों के खिलाफ भजन गाए और बहस की, जैसे उन्होंने 8000 जैन साधुओं को हराया। अप्पर ने राजा को जैन से शैव बनाने में मदद की। यह आंदोलन नास्तिक विचारों के खिलाफ था, जो भगवान में विश्वास नहीं करते थे। राजाओं ने मंदिर बनवाए और उत्सव शुरू किए, जो बौद्ध-जैन की सादगी के विपरीत थे। परिणामस्वरूप, 9वीं शताब्दी तक जैन और बौद्ध धर्म कमजोर हो गए, और कई लोग हिंदू धर्म में लौट आए। लेकिन यह चुनौती सिर्फ विरोध नहीं थी, बल्कि संतुलित थी – संतों ने जीवन को सकारात्मक बनाया, जहां भक्ति से मुक्ति मिलती है। इतिहास में यह कहा जाता है कि भक्ति आंदोलन ने बौद्ध और जैन को हराकर हिंदू धर्म को मजबूत किया, लेकिन कुछ विद्वान कहते हैं कि यह साझा विकास भी था। जैन और बौद्ध मंदिरों की तरह शैव मंदिर बने, और छवि पूजा बढ़ी। यह आंदोलन तमिल राष्ट्रवाद से भी जुड़ा, जहां तमिल संस्कृति को बचाया गया। कुल मिलाकर, यह चुनौती ने तमिल समाज को नई दिशा दी, जहां भक्ति ने धार्मिक विविधता को संतुलित किया।

सांस्कृतिक और सामाजिक प्रभाव

शैव भक्ति आंदोलन ने तमिल संस्कृति और समाज पर गहरा असर डाला, जो आज भी दिखता है। इसने जाति व्यवस्था को चुनौती दी और कहा कि भक्ति में सब बराबर हैं, चाहे कोई भी जाति हो। संत अलग-अलग पृष्ठभूमि से थे, जो समाज में समानता लाया। महिलाओं को भी भक्ति में जगह मिली, जैसे कराइकल अम्मैयार। तमिल साहित्य समृद्ध हुआ, क्योंकि भजन स्थानीय भाषा में थे, जो आम लोगों तक पहुंचे। मंदिर संस्कृति बढ़ी, जहां सामूहिक गान और त्योहार मनाए जाते हैं। यह आंदोलन आदिवासी लोगों को भी हिंदू धर्म से जोड़ा। सामाजिक रूप से, यह क्रांति की तरह था, जहां वैदिक रीति-रिवाजों के बजाय निजी भक्ति पर जोर पड़ा। लेकिन कुछ विद्वान कहते हैं कि जाति पूरी तरह नहीं गई, बल्कि कमजोर हुई। संस्कृति में, तमिल राष्ट्रवाद की नींव पड़ी, जहां तमिल भाषा और परंपराओं को महत्व मिला। 19वीं-20वीं शताब्दी में मरैमलै अडिगल जैसे सुधारकों ने इसे आगे बढ़ाया, जो ब्राह्मणवाद के खिलाफ था। कुल मिलाकर, यह आंदोलन ने तमिल समाज को एकजुट किया और सांस्कृतिक पहचान मजबूत की।

आज का महत्व

आज भी शैव भक्ति आंदोलन तमिलनाडु में जीवित है, जहां मंदिरों में नयनारों के भजन गाए जाते हैं। यह आंदोलन आधुनिक तमिल पहचान का हिस्सा है, जो समानता और भक्ति सिखाता है। राजनीति में, द्रविड़ आंदोलन इससे प्रेरित हुआ, जहां तमिल संस्कृति को बढ़ावा मिला। लेकिन कुछ लोग कहते हैं कि यह ब्राह्मणवाद के खिलाफ था, जो समाज में विभाजन लाया। फिर भी, यह धार्मिक सहिष्णुता का प्रतीक है। वैश्विक स्तर पर, भक्ति की अवधारणा अन्य संस्कृतियों में फैली। तमिल समाज में, यह उत्सव और संगीत का आधार है। कुल मिलाकर, यह इतिहास हमें सिखाता है कि भक्ति से बड़े बदलाव आ सकते हैं।

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम
भारत श्री

देश में OBC और SC वर्ग के IAS-IPS अधिकारी सरकार के ताजा आंकड़े खोलते हैं राज

आंकड़ों की रोशनी में सामाजिक न्याय की तस्वीर

भारत में सिविल सर्विसेज जैसे IAS और IPS में OBC और SC वर्ग के लोगों की भागीदारी हमेशा से चर्चा का विषय रही है। सरकार के नए आंकड़ों से पता चलता है कि इन सेवाओं में आरक्षण की नीति तो लागू है, लेकिन कुल संख्या के बारे में स्पष्ट जानकारी कम है। 2025 की शुरुआत में, IAS में कुल 6877 पद स्वीकृत हैं, जिनमें से 5577 अधिकारी काम कर रहे हैं, जबकि 1300 पद खाली हैं। IPS में 5099 पदों में से 4594 अधिकारी हैं और 505 पद रिक्त हैं। इन सेवाओं में SC और OBC की भागीदारी बढ़ रही है, लेकिन पुरानी भर्तियों के कारण सामान्य वर्ग का दबदबा अभी भी ज्यादा है। आरक्षण नीति के तहत OBC को 27 प्रतिशत, SC को 15 प्रतिशत और ST को 7.5 प्रतिशत जगह मिलती है, जो सामाजिक न्याय को बढ़ावा देती है। फिर भी, कई रिपोर्ट बताती हैं कि OBC और SC के अधिकारी मुख्य पदों पर कम पहुंच पाते हैं। यह स्थिति सोचने पर मजबूर करती है कि क्या आरक्षण सिर्फ संख्या भरने का साधन है या वास्तव में समाज के कमजोर वर्गों को मजबूत बनाने का। सरकार के आंकड़े दिखाते हैं कि पिछले पांच वर्षों में IPS में OBC और SC की भर्ती IAS से ज्यादा हुई है। इससे लगता है कि पुलिस सेवा में विविधता बढ़ रही है, लेकिन कुल मिलाकर प्रशासन में संतुलन बनाने के लिए और प्रयास की जरूरत है। अगर हम देश की जनसंख्या देखें, तो SC की आबादी करीब 16 प्रतिशत और OBC की 40-50 प्रतिशत है, लेकिन सिविल सर्विसेज में उनकी हिस्सेदारी इससे कम लगती है। यह अंतर सामाजिक असमानता को दर्शाता है और सरकार को अधिक पारदर्शिता बरतने की जरूरत बताता है। कुल मिलाकर, ये आंकड़े हमें विचार करने का मौका देते हैं कि आरक्षण नीति कितनी प्रभावी है और आगे क्या बदलाव लाए जा सकते हैं ताकि हर वर्ग को बराबर मौका मिले।

पिछले पांच वर्षों में भर्ती के आंकड़े क्या कहते हैं

सरकार के ताजा आंकड़ों के मुताबिक, 2020 से 2024 तक सिविल सर्विस परीक्षा के जरिए IAS और IPS में OBC और SC वर्ग के उम्मीदवारों की भर्ती हुई है। IAS में OBC के 245, SC के 135 और ST के 67 अधिकारी नियुक्त हुए। IPS में OBC के 255, SC के 141 और ST के 71 अधिकारी आए। इन आंकड़ों से साफ है कि IPS में OBC और SC की संख्या IAS से थोड़ी ज्यादा है, जो एक सकारात्मक ट्रेंड दिखाता है। यह बदलाव आरक्षण नीति के कारण है, जहां परीक्षा में कमजोर वर्गों को कट-ऑफ में छूट मिलती है। लेकिन ये सिर्फ नई भर्तियां हैं, कुल सेवारत अधिकारियों की संख्या इनसे ज्यादा है। पुराने अधिकारी ज्यादातर सामान्य वर्ग से हैं क्योंकि OBC आरक्षण 1993 से शुरू हुआ। इन पांच वर्षों में कुल 447 OBC और SC-ST अधिकारी IAS में आए, जबकि IPS में 467। इससे लगता है कि पुलिस सेवा में विविधता बढ़ाने पर जोर है, शायद इसलिए क्योंकि IPS में ग्राउंड लेवल काम ज्यादा है और लोकल प्रतिनिधित्व जरूरी है। हालांकि, कई विशेषज्ञ कहते हैं कि इन भर्तियों में भी कुछ उप-जातियां ज्यादा फायदा उठा रही हैं, जबकि बाकी पिछड़ रही हैं। सरकार को रोहिणी आयोग की रिपोर्ट पर अमल करना चाहिए, जो OBC में सब-कैटेगरी बनाने की सिफारिश करती है। ये आंकड़े विचार करने लायक हैं कि क्या आरक्षण का फायदा सही लोगों तक पहुंच रहा है। कुल मिलाकर, पिछले पांच वर्षों की भर्ती से साफ है कि SC और OBC की भागीदारी बढ़ रही है, लेकिन कुल प्रशासन में संतुलन बनाने के लिए और साल लगेंगे। यह ट्रेंड सामाजिक न्याय की दिशा में कदम है, लेकिन चुनौतियां अभी भी बाकी हैं।

रिक्त पद और प्रशासन पर असर

IAS और IPS में बड़ी संख्या में रिक्तियां एक बड़ी समस्या है, जो प्रशासन की दक्षता पर असर डालती है। 2025 के आंकड़ों के अनुसार, IAS में 1300, IPS में 505 पद खाली हैं, कुल मिलाकर 2834 रिक्तियां। ये रिक्तियां इसलिए हैं क्योंकि भर्ती प्रक्रिया लंबी है और कई अधिकारी रिटायर हो जाते हैं। OBC और SC वर्ग के लिए ये रिक्तियां मौका भी हैं, लेकिन अगर भर्ती में देरी हुई तो फायदा नहीं मिलता। सरकार कहती है कि UPSC हर साल परीक्षा लेती है, लेकिन पदों की संख्या कम रहती है। उदाहरण के लिए, 2024 में UPSC ने 1056 पदों की भर्ती की थी, लेकिन जरूरत ज्यादा है। इन रिक्तियों से जमीनी स्तर पर काम प्रभावित होता है, जैसे पुलिसिंग में कमी या प्रशासनिक फैसलों में देरी। SC और OBC अधिकारियों की कम संख्या से नीतियां बनाने में उनके दृष्टिकोण की कमी रहती है। कई रिपोर्ट बताती हैं कि अगर विविधता ज्यादा हो तो नीतियां बेहतर बनती हैं। सरकार को रिक्तियां भरने के लिए विशेष अभियान चलाने चाहिए,

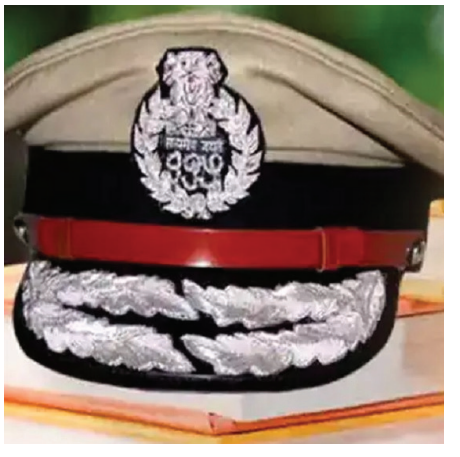

खासकर आरक्षित वर्गों के लिए। राज्य स्तर पर भी रिक्तियां हैं, जैसे उत्तर प्रदेश में IAS के 652 पदों में 571 ही भरे हैं। यह स्थिति सोचने वाली है कि क्या सरकार आरक्षण को सिर्फ कागज पर लागू कर रही है या वास्तव में। कुल मिलाकर, रिक्तियां भरने से OBC और SC की भागीदारी बढ़ेगी और प्रशासन अधिक समावेशी बनेगा।

आरक्षण नीति की चुनौतियां और सुधार

आरक्षण नीति SC और OBC को मौका देती है, लेकिन कई चुनौतियां हैं जो इसकी प्रभावशीलता कम करती हैं। सरकार के आंकड़ों से पता चलता है कि भर्ती तो हो रही है, लेकिन पदोन्नति में देरी और क्रीमी लेयर जैसी शर्तें समस्या पैदा करती हैं। OBC में क्रीमी लेयर से कई योग्य उम्मीदवार बाहर हो जाते हैं, जबकि SC में ऐसी कोई शर्त नहीं। 2018-2022 के आंकड़ों में OBC के 486 अधिकारी IAS-IPS में आए, जो 29.4 प्रतिशत है, जबकि सामान्य 46 प्रतिशत। यह ट्रेंड अच्छा है, लेकिन कुल सेवारत अधिकारियों में OBC की हिस्सेदारी कम है क्योंकि पुरानी भर्तियां आरक्षण से पहले की हैं। कई विशेषज्ञ कहते हैं कि सब-कैटेगरी बनानी चाहिए ताकि फायदा सभी तक पहुंचे। रोहिणी आयोग ने OBC को चार ग्रुप में बांटने का सुझाव दिया है। साथ ही, ट्रेनिंग और तैयारी में मदद बढ़ानी चाहिए क्योंकि परीक्षा कठिन है। सरकार को कुल सेवारत अधिकारियों के वर्ग-वार आंकड़े जारी करने चाहिए ताकि पारदर्शिता आए। अगर ऐसा नहीं हुआ तो आरक्षण का उद्देश्य अधूरा रह जाएगा। ये चुनौतियां हमें सोचने पर मजबूर करती हैं कि नीति में सुधार कैसे लाएं। कुल मिलाकर, आरक्षण एक अच्छा कदम है, लेकिन इसे और मजबूत बनाने की जरूरत है।

आगे की राह: समावेशी प्रशासन की ओर

सरकार के ताजा आंकड़ों से साफ है कि OBC और SC वर्ग के IAS-IPS अधिकारियों की संख्या बढ़ रही है, लेकिन कुल तस्वीर अभी धुंधली है। पिछले पांच वर्षों में भर्ती के आंकड़े सकारात्मक हैं, लेकिन रिक्तियां और पुरानी असमानता चुनौती बनी हुई है। अगर सरकार कुल सेवारत अधिकारियों के वर्ग-वार डेटा जारी करे तो बेहतर होगा। इससे नीतियां बनाने में मदद मिलेगी। साथ ही, शिक्षा और तैयारी में सहायता बढ़ाकर अधिक उम्मीदवारों को तैयार किया जा सकता है। समावेशी प्रशासन से देश की प्रगति तेज होगी क्योंकि हर वर्ग का दृष्टिकोण जरूरी है। यह स्थिति हमें याद दिलाती है कि सामाजिक न्याय सिर्फ कानून से नहीं, अमल से आता है।

बांग्लादेश की सत्ता में बड़ा बदलाव: तारिक रहमान प्रधानमंत्री बनने की राह पर

तारिक रहमान की जीत का मतलब क्या है?

बांग्लादेश में हाल ही में हुए चुनावों ने राजनीति को नया मोड़ दिया है। 12 फरवरी 2026 को हुए संसदीय चुनाव में बांग्लादेश नेशनलिस्ट पार्टी (बीएनपी) ने भारी बहुमत से जीत हासिल की है। पार्टी के नेता तारिक रहमान अब देश के अगले प्रधानमंत्री बनने वाले हैं। उनकी शपथ 17 फरवरी को होनी है। यह जीत 2024 में शेख हसीना की सरकार गिरने के बाद पहला चुनाव था, जहां छात्रों के नेतृत्व वाले आंदोलन ने बड़ा बदलाव लाया। मुहम्मद यूनुस की अंतरिम सरकार ने चुनाव करवाए और अब सत्ता सौंप रही है। तारिक रहमान 17 साल लंदन में निर्वासन में रहने के बाद दिसंबर 2025 में लौटे थे। उनकी पार्टी ने 299 सीटों में से कम से कम 209 सीटें जीतीं, जो दो-तिहाई बहुमत है। यह नतीजा दिखाता है कि लोग बदलाव चाहते हैं, खासकर भ्रष्टाचार, आर्थिक मुश्किलों और सुरक्षा पर। तारिक ने जीत के बाद एकता की अपील की और कहा कि यह उन लोगों को समर्पित है जिन्होंने लोकतंत्र के लिए बलिदान दिया। अंतरिम नेता यूनुस ने उन्हें बधाई दी और सत्ता हस्तांतरण की तैयारी की। भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी तारिक को बधाई दी और कहा कि भारत लोकतांत्रिक बांग्लादेश का साथ देगा। लेकिन सवाल उठता है कि यह बदलाव पड़ोसी देशों के लिए क्या मायने रखता है। पाकिस्तान और चीन के लिए यह झटका हो सकता है, क्योंकि शेख हसीना के समय भारत के साथ रिश्ते मजबूत थे, जबकि बीएनपी का इतिहास पाकिस्तान से करीब का रहा है। फिर भी, तारिक ने 'बांग्लादेश फर्स्ट' नीति की बात की, जिसमें सभी देशों से संतुलित रिश्ते रखने पर जोर है। यह स्थिति विचार करने लायक है कि क्या यह भारत के लिए फायदेमंद साबित होगा या चुनौतियां बढ़ाएगा। कुल मिलाकर, यह चुनाव बांग्लादेश की राजनीति में स्थिरता ला सकता है, लेकिन क्षेत्रीय संबंधों पर असर पड़ेगा। यह जीत न केवल घरेलू मुद्दों पर फोकस करती है बल्कि विदेश नीति में भी बदलाव का संकेत देती है, जो पड़ोसियों को सोचने पर मजबूर करेगी।

तारिक रहमान का सफर: निर्वासन से सत्ता तक

तारिक रहमान बांग्लादेश की राजनीति में एक बड़ा नाम हैं, जो पूर्व राष्ट्रपति जियाउर रहमान के बेटे और पूर्व प्रधानमंत्री खालिदा जिया के पुत्र हैं। 2008 में भ्रष्टाचार के आरोपों के कारण वे लंदन चले गए थे और 17 साल वहां रहे। दिसंबर 2025 में वे ढाका लौटे, जहां उनका जोरदार स्वागत हुआ। चुनाव में उन्होंने ढाका-17 और बोगुरा-6 सीटों से जीत दर्ज की, जो उनकी राजनीतिक शुरुआत को मजबूत बनाती है। बीएनपी की जीत उनके नेतृत्व पर लोगों के भरोसे को दिखाती है। वे कहते हैं कि उनकी सरकार भ्रष्टाचार पर सख्ती करेगी और देश को नई दिशा देगी। चुनाव से पहले उन्होंने साफ राजनीति का वादा किया था। शेख हसीना की अवामी लीग को चुनाव से बाहर रखा गया था, जो 15 साल सत्ता में रही। तारिक की मां खालिदा जिया भी पूर्व प्रधानमंत्री हैं, लेकिन स्वास्थ्य कारणों से सक्रिय नहीं हैं। तारिक का लौटना राजनीतिक परिवार की विरासत को आगे बढ़ाता है। उन्होंने चुनाव में बदलाव का नारा दिया, जो युवाओं और आम लोगों को पसंद आया। अब चुनौती है कि वे अर्थव्यवस्था को पटरी पर लाएं, जहां महंगाई और बेरोजगारी बड़ी समस्या हैं। सुरक्षा और सार्वजनिक सेवाओं पर भी फोकस होगा। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर, वे बहुपक्षीयता पर जोर देते हैं, यानी किसी एक देश पर निर्भर नहीं रहना। यह नीति पाकिस्तान, चीन और भारत सभी के साथ संतुलन बनाने की कोशिश है। लेकिन इतिहास में बीएनपी को पाकिस्तान के करीब माना जाता है, जो 1971 की आजादी की लड़ाई में विरोधी था। तारिक कहते हैं कि विदेश नीति बांग्लादेश के हितों पर आधारित होगी। उनकी जीत से जमत-ए-इस्लामी जैसी पार्टियां हार गईं, जो कट्टरपंथी हैं। यह लोकतंत्र के लिए अच्छा संकेत है, लेकिन सवाल है कि क्या वे अल्पसंख्यकों की रक्षा करेंगे। कुल मिलाकर, तारिक का सफर प्रेरणादायक है, लेकिन सत्ता संभालने में कई चुनौतियां हैं। यह बदलाव क्षेत्रीय स्थिरता पर असर डालेगा, जहां सभी की नजरें हैं।

भारत के लिए क्या अच्छा: रिश्तों में नई शुरुआत?

भारत और बांग्लादेश के रिश्ते हमेशा से महत्वपूर्ण रहे हैं, क्योंकि दोनों देश पड़ोसी हैं और साझा इतिहास रखते हैं। तारिक रहमान की जीत से भारत को रिश्तों को सुधारने का मौका मिल सकता है। शेख हसीना के समय रिश्ते मजबूत थे, लेकिन उनके जाने के बाद अंतरिम सरकार में तनाव बढ़ा। अब मोदी ने तारिक को बधाई दी और शपथ में शामिल होने का न्योता मिला, हालांकि वे खुद नहीं जा पाएंगे। विदेश मंत्री जयशंकर या उपराष्ट्रपति जा सकते हैं। तारिक की 'बांग्लादेश फर्स्ट' नीति से भारत को फायदा हो सकता है, अगर संतुलित रिश्ते बने। सीमा सुरक्षा, पानी बंटवारा और व्यापार जैसे मुद्दों पर बात हो सकती है। हसीना भारत में निर्वासन में हैं, जो एक मुद्दा है, लेकिन तारिक ने इसे ज्यादा तूल नहीं दिया। अल्पसंख्यक हिंदुओं की सुरक्षा पर भारत की चिंता है, और तारिक की सरकार अगर इसे संभालती है तो अच्छा होगा। आर्थिक रूप से, भारत बांग्लादेश का बड़ा व्यापार साझेदार है, जो सामान, बिजली और अनाज देता है। सिलिगुड़ी कॉरिडोर जैसी रणनीतिक जगहों पर सुरक्षा चिंता है, लेकिन अगर रिश्ते अच्छे रहें तो समस्या नहीं। विशेषज्ञ कहते हैं कि यह भारत के लिए रीसेट का मौका है, जहां पुरानी दुश्मनी भुलाकर आगे बढ़ा जा सकता है। बीएनपी का इतिहास भारत विरोधी रहा है, लेकिन तारिक युवा हैं और बदलाव चाहते हैं। वे कहते हैं कि असमान संधियों को सुधारेंगे, जो भारत के साथ हैं। अगर दोनों देश मिलकर काम करें तो विकास के लक्ष्य हासिल हो सकते हैं। पाकिस्तान और चीन के बढ़ते प्रभाव को रोकने में भी मदद मिलेगी। कुल मिलाकर, यह भारत के लिए सकारात्मक हो सकता है, अगर विश्वास बना रहे। लेकिन सतर्क रहना जरूरी है, क्योंकि इतिहास दोहराया जा सकता है।

पाकिस्तान-चीन के लिए झटका: संतुलन बिगड़ सकता है?

पाकिस्तान और चीन बांग्लादेश के महत्वपूर्ण साझेदार रहे हैं, लेकिन तारिक रहमान की जीत से उनके लिए चुनौतियां बढ़ सकती हैं। बीएनपी का पाकिस्तान से पुराना रिश्ता है, क्योंकि 1971 की लड़ाई में जमत जैसी पार्टियां पाकिस्तान के साथ थीं। हाल में अंतरिम सरकार ने पाकिस्तान से रक्षा और व्यापार बढ़ाया, जो 1971 के बाद पहली बार हुआ। लेकिन तारिक कहते हैं कि विदेश नीति बांग्लादेश के हितों पर होगी, न कि किसी देश पर। चीन के साथ बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (बीआरआई) पर सहयोग जारी रह सकता है, क्योंकि चीन ने अरबों डॉलर निवेश किए हैं। हसीना के समय भारत की चिंताओं को ध्यान में रखा जाता था, लेकिन अब अगर तारिक भारत की तरफ झुकें तो चीन के लिए झटका होगा। पाकिस्तान के लिए भी, अगर रिश्ते सीमित रहें तो नुकसान। विशेषज्ञ कहते हैं कि तारिक को संतुलन बनाना होगा, वरना भारत नाराज हो सकता है। पाकिस्तान और चीन का प्रभाव बढ़ना भारत की सुरक्षा के लिए खतरा है, खासकर सिलिगुड़ी कॉरिडोर पर। तारिक की सरकार अगर पाकिस्तान से दूरी बनाए तो यह उनके लिए बड़ा झटका होगा। लेकिन अगर जारी रहा तो कोई बदलाव नहीं। युवा बांग्लादेशी भारत को दुश्मन मानते हैं, लेकिन तारिक बदलाव ला सकते हैं। चीन हथियार और इंफ्रास्ट्रक्चर देता है, जो जारी रहेगा। कुल मिलाकर, यह पाक-चीन के लिए विचार करने का समय है, क्योंकि बांग्लादेश अब स्वतंत्र नीति अपनाएगा। यह स्थिति क्षेत्रीय राजनीति को प्रभावित करेगी।

आगे की राह: स्थिरता और चुनौतियां

तारिक रहमान की सरकार के सामने कई काम हैं, जो देश और क्षेत्र को प्रभावित करेंगे। सबसे पहले घरेलू मुद्दे जैसे भ्रष्टाचार रोकना, अर्थव्यवस्था सुधारना और सुरक्षा बढ़ाना। चुनाव में कोई बड़ा हिंसा नहीं हुई, जो अच्छा संकेत है। विदेश नीति में संतुलन बनाना जरूरी होगा, जहां भारत, पाकिस्तान और चीन सभी से अच्छे रिश्ते रखें। अगर भारत के साथ रिश्ते सुधरें तो व्यापार और सुरक्षा में फायदा। पाक-चीन के लिए अगर दूरी बढ़ी तो झटका, लेकिन तारिक कहते हैं कि सहयोग जारी रहेगा अगर बांग्लादेश को फायदा हो। अल्पसंख्यकों की रक्षा और लोकतंत्र मजबूत करना महत्वपूर्ण है। युवाओं की उम्मीदें पूरी करनी होंगी, जो आंदोलन से निकले हैं। क्षेत्रीय स्तर पर, यह बदलाव दक्षिण एशिया की राजनीति को नया रूप दे सकता है। अगर सभी देश मिलकर काम करें तो शांति और विकास होगा। लेकिन अगर असंतुलन हुआ तो तनाव बढ़ सकता है। तारिक का नेतृत्व युवा और नया है, जो अवसर देता है। कुल मिलाकर, यह समय सोच-समझकर फैसले लेने का है।

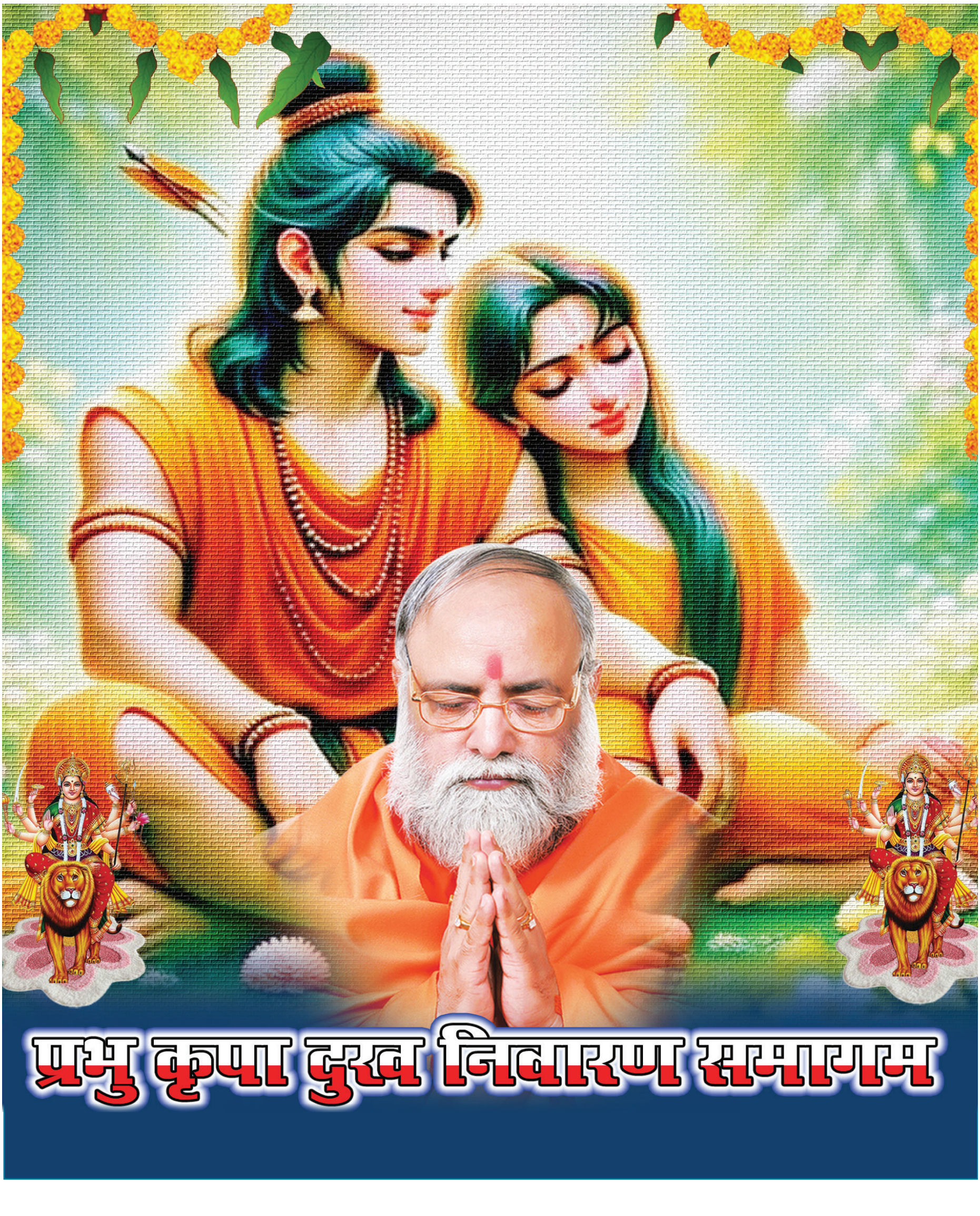
प्रभु कृपा दुख निवारण समागम

BY

Arihanta Industries

ULTIMATE HAIR SOLUTION

- BHRINGRAJ
- AMLA
- REETHA
- SHIKAKAI

100 ML

15 ML

NO ARITIFICIAL COLOR FRAGRANCE CHEMICAL

KESH VARDAK SHAMPOO

The complete solution of all hair problems:

- Prevent hair fall and make hair follicle strong.
- Promote hair growth.
- Free from all artificial & harmful chemicals like., SLS.
- 100% pure ayurvedic shampoo.
- Suitable for all hair types.

ORDER ONLINE @ :

amazon

arihanta.in

Arihanta Industries